78-सूरत-नबा

"इस मक्की सूरत में 2 रूकू और 40 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿١﴾ عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ﴿٢﴾ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ ﴿٣﴾ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ﴿٤﴾ ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ﴿٥﴾
اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا ﴿٦﴾ وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ﴿٧﴾ وَّخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ﴿٨﴾ وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ﴿٩﴾ وَّجَعَلْنَا
الَّيْلَ لِبَاسًا ﴿١٠﴾ وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ﴿١١﴾ وَّبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ﴿١٢﴾ وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ﴿١٣﴾ وَّاَنْزَلْنَا
مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ﴿١٤﴾ لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ﴿١٥﴾ وَّجَنّٰتٍ اَلْفَافًا ﴿١٦﴾ اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ﴿١٧﴾
يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ﴿١٨﴾ وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ﴿١٩﴾ وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ﴿٢٠﴾
اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ﴿٢١﴾ لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰبًا ﴿٢٢﴾ لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ اَحْقَابًا ﴿٢٣﴾ لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ﴿٢٤﴾
اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا ﴿٢٥﴾ جَزَآءً وِّفَاقًا ﴿٢٦﴾ اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ حِسَابًا ﴿٢٧﴾ وَّكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٨﴾ وَكُلَّ شَيْءٍ
اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا ﴿٢٩﴾ فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾

आयत नं0 01 से 30

ये (क़ियामत का इनकार करने वाले) **लोग किस चीज़ के बारे में पूछते हैं(01) उस बड़ी ख़बर** (यानी क़ियामत) **के बारे में पूछते हैं(02) जिसमें ये लोग** (सच्चे दीन वालों की) **मुख़ालफ़त कर रहे हैं(03)** (जैसा ये लोग समझते हैं कि क़ियामत न आएगी) **हरगिज़** (ऐसा) **नहीं** (बल्कि क़ियामत ज़रूर आएगी और) **उन को अभी पता चल जाएगा** (यानी दुनिया से जाने के बाद उन पर असलीयत खुल जाएगी जब उन पर अ़ज़ाब आएगा)**(04) फिर** (हम दोबारा कहते हैं कि जैसा ये लोग समझते हैं कि क़ियामत नहीं आएगी ऐसा) **हरगिज़ नहीं** (बल्कि आएगी और) **उनको अभी पता चल जाएगा(05)** (और वो लोग दोबारा पैदा होने को मुश्किल समझते थे इसलिए क़ुदरत की दलीलें बयान की जाती हैं कि) **क्या हमने ज़मीन को फ़र्श नहीं बनाया(06) और पहाड़ों को** (ज़मीन की) **कीलें**

(नहीं बनाया यानी कीलों की तरह जैसे किसी चीज़ में कीलें गाड़ देने से वो अपनी जगह से हिलती नहीं)(07) **और हम ही ने तुम को जोड़ा-जोड़ा** (यानी मर्द व औरत) **बनाया(08) और हम ही ने तुम्हारी नींद को आराम की चीज़ बनाया(09) और हम ही ने रात को पर्दे की चीज़ बनाया(10) और हम ही ने दिन को रोज़गार का वक़्त बनाया(11) और हम ही ने तुम्हारे ऊपर सात मज़बूत आसमान बनाए(12) और हम ही ने** (आसमान में) **एक चमकता चराग़** (यानी सूरज) **बनाया(13) और हम ही ने पानी भरे बादलों से मूसलाधार पानी बरसाया(14) ताकि हम उस पानी से अनाज और सब्ज़ी पैदा करें(15) और घने बाग़** (पैदा करें, तो इन सब कमालों को देखने के बाद फिर हमारे क़ियामत बरपा करने का इनकार क्यों किया जाता है)(16) **बेशक फ़ैसले का दिन एक तय किया हुआ वक़्त है(17) यानी जिस दिन सूर फूंका जाएगा फिर तुम लोग गिरोह-गिरोह होकर आओगे** (यानी हर उम्मत अलग-अलग होगी, फिर मोमिन अलग काफ़िर अलग नेक अलग बदकार अलग)(18) **और आसमान खुल जाएगा फिर उसमें दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाऐंगे** (यानी इतना बड़ा खुल जाएगा जैसे बहुत से दरवाज़े मिला कर बहुत बड़ी जगह होती है यूं दरवाज़े आसमान में अब भी हैं)(19) **और पहाड़** (अपनी जगह से) **हटा दिये जाएंगे तो वो** (चूरा होकर) **रेत की तरह से हो जाएंगे(20) बेशक दोज़ख़ एक धात की जगह** (है यानी अज़ाब के फ़रिशते इन्तिज़ार और ताक में हैं कि पकड़ कर अज़ाब दिया जाए जैसे ही काफ़िर आता) **है(21)** (और वो) **बाग़ियों का ठिकाना** (है)(22) **जिसमें वो मुद्दतों** (यानी सदा पड़े) **रहेंगे(23)** (और) **उसमें वो न तो किसी ठन्डक** (यानी आराम) **का मज़ा चक्खेंगे और न पीने के क़ाबिल चीज़ का** (जिससे प्यास बुझे)(24) **सिवाए गर्म पानी और पीप** (लहू) **के(25) यह** (उनको) **पूरा बदला मिलेगा(26)** (क्योंकि) **वो लोग** (क़ियामत के) **हिसाब का यक़ीन नहीं रखते थे(27) और हमारी** (उन) **आयतों को** (जिनमें हिसाब व दूसरी सच्ची बातों की ख़बर थी) **झूटा बताते थे(28) और हमने** (उनके किये कामों में से) **हर चीज़ को** (उन के आमाल नामे में) **लिख कर रख रक्खा है(29) तो** (उनके काम दिखा कर कहा जाएगा अब उन कामों का) **मज़ा चक्खो कि हम तुम को सज़ा ही बढ़ाते चले जाऐंगे(30)।**

नोटः- एक हदीस में है कि लोग क़ियामत के दिन तीन फ़ौजों में बन्टे होंगे। एक फ़ौज उन लोगों की जो पेट भरे हुए लिबास पहने हुए सवारियों पर सवार मैदाने हश्र में आएंगे। दूसरी फ़ौज पैदल लोगों की होगी जो चल कर मैदान में आएंगे। तीसरी फ़ौज उन लोगों की होगी जिन को चेहरों के बल घसीट कर मैदाने हश्र में लाया जाएगा। (मज़हरी)

إِنَّ لِلْمُتَّقِينَ مَفَازًا ﴿٣١﴾ حَدَآئِقَ وَأَعْنَابًا ﴿٣٢﴾ وَّكَوَاعِبَ أَتْرَابًا ﴿٣٣﴾ وَّكَأْسًا دِهَاقًا ﴿٣٤﴾ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَّلَا
كِذّٰبًا ﴿٣٥﴾ جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ﴿٣٦﴾ رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُونَ مِنْهُ
خِطَابًا ﴿٣٧﴾ يَوْمَ يَقُومُ الرُّوحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا لَّا يَتَكَلَّمُونَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾ ذٰلِكَ
الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ إِلٰى رَبِّهِ مَاٰبًا ﴿٣٩﴾ إِنَّآ أَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيبًا يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ
يَدٰهُ وَيَقُولُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِي كُنْتُ تُرٰبًا ﴿٤٠﴾

(और आगे ईमान वालों के फ़ैसले का बयान है कि) **अल्लाह से डरने वालों के लिए बेशक कामयाबी है(31)** (यानी खाने और घूमने को) **बाग़** (जिनमें तरह-तरह के फल होंगे) **और अंगूर(32) और** (दिल बहलाने को) **नौजवान हम उम्र औरतें हैं(33) और** (पीने को ऊपर तक) **भरे हुए शराब के पियाले(34)** (और) **वहां न कोई ग़लत बात सुनेंगे और न झूट** (क्योंकि ये बातें वहां नहीं है)**(35) यह** (उन को उन की नेकियों का) **बदला मिलेगा जो कि बड़ा इनआम होगा आप के रब की तरफ़ से(36) जो मालिक है आसमानों और ज़मीन का और उन चीज़ों का जो दोनों के बीच में हैं** (और जो) **बहुत महरबान है** (और) **किसी की हिम्मत नहीं जो बिना इजाज़त उसके सामने बोल सके(37) जिस दिन सभी जानदार और फ़रिशते** (अल्लाह के सामने) **सफ़ बान्धकर** (अदब के साथ) **खड़े होंगे,** (उस दिन) **कोई नहीं बोल सकेगा सिवाए उसके जिस को अल्लाह तआ़ला** (बोलने की) **इजाज़त देदे और वो आदमी बात भी ठीक कहे** (यानी उतनी बात कहे जितनी इजाज़त मिली है)**(38) यह दिन** (जो ऊपर बताया गया) **ज़रूर आने वाला है तो जिस का जी चाहे** (उसकी बातें सुन कर) **अपने रब के पास** (अपना) **ठिकाना बना रक्खे** (यानी नेक काम करे कि वहां अच्छा ठिकाना मिले)**(39) हमने** (ऐ लोगो) **तुम को एक पास आने वाले अज़ाब से डरा दिया है,** (जो कि ऐसे दिन में होने वाला है) **जिस दिन हर आदमी उन कामों को** (अपने सामने हाज़िर) **देख लेगा जो उसने अपने हाथों किये होंगे और काफ़िर** (पछता कर) **कहेगा कि काश मैं मिट्टी हो** (जाता ताकि अज़ाब से बच) **जाता(40)।**

नोटः- लिखा है कि क़ियामत में सारे इन्सान व जिन्नात और जानवर सब जमा कर दिये जाऐंगे। और जानवरों में से जिसने दुनिया में दूसरे जानवर पर जुल्म किया था तो हश्र के मैदान में उससे बदला लिया जाएगा और सज़ा दी जाएगी। यहां तक कि अगर किसी सींग वाली बकरी ने बेसींग

वाली बकरी को मारा था तो उससे भी बदला दिलवाया जाएगा। और बाद में सब जानवरों को मिट्टी कर दिया जाएगा इसे देख कर काफ़िर लोग तमन्ना करेंगे कि काश हम जानवर होते और इस वक़्त मिट्टी हो जाते ताकि हिसाब किताब और जहन्नम की सज़ा से बच जाते।

79-सूरत-नाज़िआत

''इस मक्की सूरत में 2 रूकू और 46 आयतें हैं''

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ۙ﴿۱﴾ وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ۙ﴿۲﴾ وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ۙ﴿۳﴾ فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ۙ﴿۴﴾ فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۘ﴿۵﴾
يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۙ﴿۶﴾ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ؕ﴿۷﴾ قُلُوْبٌ يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ۙ﴿۸﴾ اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۘ﴿۹﴾
يَقُوْلُوْنَ ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِى الْحَافِرَةِ ؕ﴿۱۰﴾ ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ؕ﴿۱۱﴾ قَالُوْا تِلْكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۘ﴿۱۲﴾
فَاِنَّمَا هِىَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ۙ﴿۱۳﴾ فَاِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ؕ﴿۱۴﴾ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۘ﴿۱۵﴾ اِذْ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالْوَادِ
الْمُقَدَّسِ طُوًى ۚ﴿۱۶﴾ اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۖ﴿۱۷﴾ فَقُلْ هَلْ لَّكَ اِلٰٓى اَنْ تَزَكّٰى ۙ﴿۱۸﴾ وَاَهْدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ
فَتَخْشٰى ۚ﴿۱۹﴾ فَاَرٰىهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰى ۖ﴿۲۰﴾ فَكَذَّبَ وَعَصٰى ۖ﴿۲۱﴾ ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعٰى ۖ﴿۲۲﴾ فَحَشَرَ فَنَادٰى ۖ﴿۲۳﴾ فَقَالَ اَنَا
رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ۖ﴿۲۴﴾ فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى ؕ﴿۲۵﴾ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ؕ﴿۲۶﴾

आयत नं0 01 से 26

क़सम है उन (फ़रिश्तों) **की जो** (काफ़िरों की) **जान सख़्ती से निकालते हैं(01) और जो** (मुसलमानों की रूह आसानी से निकालते हैं जैसे कि उनका) **बन्द खोल देते हैं(02) और जो** (रूहों को लेकर ज़मीन से आसमान की तरफ़ इस तरह तेज़ी व आसानी से चलते हैं जैसे) **तैरते हुए चलते हैं(03) फिर** (रूहों के बारे में अल्लाह का जो हुक्म होता है उसे पूरा करने के लिए) **तेज़ी के साथ दौड़ते हैं(04) फिर हर हुक्म को पूरा करते हैं(05)** (उन सब की क़सम खाकर कहते हैं कि क़ियामत ज़रूर आएगी) **जिस दिन हिला देने वाली हिला डालेगी** (यानी क़ियामत का सूर फूंकने की पहली आवाज़ होगी)**(06) जिस के बाद पीछे आने वाली चीज़ आजाएगी** (यानी सूर फूंकने की दूसरी आवाज़ होगी)**(07) बहुत से दिल उस दिन धड़क रहे होंगे(08) उन की आँखें** (शर्म के मारे) **झुक रहीं होंगी(09)** (मगर ये लोग क़ियामत का इनकार कर रहे हैं और) **कहते हैं कि क्या**

हम पहली हालत में फिर वापिस होंगे (यानी क्या मरने के बाद फिर ऐसे ही बन जाएंगे भला ऐसा कैसे हो सकता है)(10) **क्या जब हमारी हड्डियां गल जाएंगी फिर** (ज़िन्दगी की तरफ़) **वापिस होंगे** (यानी यह बहुत मुश्किल है)(11) **कहने लगे कि** (अगर ऐसा हुआ तो) **इस सूरत में यह वापिसी** (हमारे लिए) **बड़े नुक़सान की होगी** (क्योंकि हमने इसके लिए कुछ सामान तो जमा किया नहीं यानी यक़ीन न करके हंसी उड़ाते हैं)(12) **तो** (यह समझलें कि हम को कुछ मुश्किल नहीं बल्कि) **बस वो एक ज़ोर की आवाज़ होगी(13) जिससे सब फ़ौरन ही मैदान में आ मौजूद होंगे(14)** (आगे झुटलाने वालों पर मूसा अलैहिस्सलाम का क़िस्सा फ़िरऔन के साथ बयान किया जाता है ताकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली हो बस बताते हैं कि) **क्या आप को मूसा** (अलैहिस्सलाम) **का क़िस्सा पहुंचा है(15) जब कि उन को उनके रब ने एक पाक मैदान यानी तुवा** (नाम के मैदान) **में पुकारा(16) कि तुम फ़िरऔन के पास जाओ कि उसने बहुत सर उठा रक्खा है(17) बस उससे** (जाकर) **कहो कि क्या तुम यह चाहते हो कि तुम सुधर जाओ(18) और** (सुधरने के लिए) **मैं तुम को तुम्हारे रब की तरफ़ रास्ता दिखाऊं तो तुम** (उस हस्ती व उस की शान को सुन कर उससे) **डरने लगो** (और उससे डर कर सुधर जाओ)(19) **तो** (यह सुन कर मूसा अलैहिस्सलाम उसके पास गये और यह ख़बर दी तो उसने पैग़म्बरी की निशानियां मांगी इस पर) **उस को बड़ी निशानी** (पैग़म्बर होने की) **दिखाई** (जैसे असा का मोजिज़ा और दूसरी निशानियां)(20) **फिर** (भी) **उस** (फ़िरऔन) **ने** (उन को) **झुटलाया और** (उनका) **कहना नहीं माना(21) फिर** (मूसा अलैहिस्सलाम से) **अलग होकर** (उनके ख़िलाफ़) **कोशिश करने लगा(22) और** (लोगों को) **इकट्ठा किया फिर** (उनके सामने) **ज़ोरदार बयान किया(23) और कहा मैं** (ही) **तुम्हारा सब से बड़ा रब हूं(24) तो अल्लाह तआला ने उस को आख़रत और दुनिया के अज़ाब में पकड़ा** (दुनिया का अज़ाब तो डूबना है और आख़रत का अज़ाब जलना है)(25) **बेशक इस क़िस्से में ऐसे आदमी के लिए बड़ा सबक़ है जो** (अल्लाह से) **डरे**(26)।

नोटः- मौत के वक़्त फ़रिश्तों का आना और इन्सान की रूह क़ब्ज़ करके आसमान की तरफ़ ले जाना फिर उसके अच्छे या बुरे ठिकाने पर जल्दी से पहुंचा देना और वहां सवाब या अज़ाब तकलीफ़ या आराम के इन्तिज़ाम कर देना इन आयतों से साबित हो गया। यह अज़ाब व सवाब क़ब्र यानी बरज़ख़ में होगा। हश्र का अज़ाब व सवाब इसके बाद है।

ءَاَنْتُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمِ السَّمَآءُ ؕ بَنٰهَا ﴿۲۷﴾ رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوّٰىهَا ﴿۲۸﴾ وَ اَغْطَشَ لَيْلَهَا وَ اَخْرَجَ ضُحٰىهَا ﴿۲۹﴾ وَ
الْاَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰىهَا ﴿۳۰﴾ اَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَ مَرْعٰىهَا ﴿۳۱﴾ وَ الْجِبَالَ اَرْسٰىهَا ﴿۳۲﴾ مَتَاعًا لَّكُمْ وَ
لِاَنْعَامِكُمْ ﴿۳۳﴾ فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ الْكُبْرٰى ﴿۳۴﴾ يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ مَا سَعٰى ﴿۳۵﴾ وَ بُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِمَنْ
يَّرٰى ﴿۳۶﴾ فَاَمَّا مَنْ طَغٰى ﴿۳۷﴾ وَ اٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿۳۸﴾ فَاِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿۳۹﴾ وَ اَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَ
نَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ﴿۴۰﴾ فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿۴۱﴾ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ﴿۴۲﴾ فِيْمَ اَنْتَ
مِنْ ذِكْرٰىهَا ﴿۴۳﴾ اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰىهَا ﴿۴۴﴾ اِنَّمَاۤ اَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَّخْشٰىهَا ﴿۴۵﴾ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْۤا اِلَّا
عَشِيَّةً اَوْ ضُحٰىهَا ﴿۴۶﴾

आयत नं0 27 से 46

(आगे क़ियामत को मुश्किल समझने का जवाब है कि ऐ इन्सानो) **भला तुम्हारा** (दूसरी बार) **पैदा करना ज़्यादा मुश्किल है या आसमान का** (पैदा करना फिर जब उस को पैदा कर दिया तो तुम्हारा पैदा करना क्या मुश्किल है) **अल्लाह ने उस को** (इस तरह से) **बनाया(27)** (कि) **उसकी छत को ऊंचा किया और उस को ठीक बनाया** (कि कहीं उसमें झिरी या जोड़ नहीं)(28) **और उस की रात को अन्धेरी बनाया और उसके दिन को रौशन बनाया** (क्योंकि रात दिन सूरज से जुडे हैं और सूरज आसमान में है)(29) **और उसके बाद ज़मीन को बिछाया(30)** (और बिछाकर) **उसमें उस का पानी और चारा निकाला(31) और पहाड़ों को** (उसपर) **जमा दिया(32) तुम्हारे और तुम्हारे जानवरों के फ़ाइदा पहुंचाने के लिए(33) तो जब वो बड़ा हंगामा बरपा होगा** (यानी क़ियामत आएगी)(34) **यानी जिस दिन इन्सान अपने किये को याद करेगा(35) और देखने वालों के सामने दोज़ख़ लाई जाएगी(36)** (उस दिन यह हालत होगी कि) **जिस आदमी ने** (सच्चे दीन से) **बग़ावत की होगी(37) और** (आख़रत का इनकार करके उस पर) **दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द किया होगा(38) तो दोज़ख़ उस का ठिकाना होगा(39) और जो आदमी** (दुनिया में) **अपने रब के सामने खड़ा होने से डरा होगा** (कि क़ियामत और आख़रत और हिसाब किताब पर उस का पूरा ईमान हो) **और** (अपने) **जी को बुराइयों से रोका होगा** (यानी सही ऐतक़ाद के साथ काम भी भले किये होंगे)(40) **तो जन्नत उस का ठिकाना होगा(41) ये** (काफ़िर) **लोग आप से क़ियामत के बारे में पूछते हैं कि वो कब आएगी(42)** (तो) **उसके बयान करने से आप का क्या वास्ता(43)**

उस (की जानकारी) **की पहुंच सिर्फ़ आप के रब की तरफ़ है**(44) (और) **आप तो सिर्फ़ ऐसे आदमी को ख़बरदार करने वाले हैं जो उससे डरता** (हो और डर कर ईमान लाने वाला) **हो**(45) (और ये लोग जो उसके आने की जल्दी मचा रहे हैं तो समझलें कि) **जिस दिन ये उस को देखेंगे तो** (उनको) **ऐसा लगेगा कि जैसे** (दुनिया में) **सिर्फ़ एक दिन के आख़री हिस्से में या उसके पहले हिस्से में रहे हैं** (यानी दुनिया में एक शाम या एक सुबह से ज़्यादा नहीं रहे)(46)।

नोटः- एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम में कोई आदमी उस वक़्त तक पूरा मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि उस के मन की चाहतें मेरी तालीम के ताबे न हो जाऐं। (मआ़रिफ़ुल क़ुरआन)

80-सूरत-अबस

''इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 42 आयतें हैं''

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

عَبَسَ وَ تَوَلّٰۤی ﴿۱﴾ اَنْ جَآءَہُ الْاَعْمٰی ﴿۲﴾ وَ مَا یُدْرِیْکَ لَعَلَّہٗ یَزَّکّٰۤی ﴿۳﴾ اَوْ یَذَّکَّرُ فَتَنْفَعَہُ الذِّکْرٰی ﴿۴﴾ اَمَّا مَنِ
اسْتَغْنٰی ﴿۵﴾ فَاَنْتَ لَہٗ تَصَدّٰی ﴿۶﴾ وَ مَا عَلَیْکَ اَلَّا یَزَّکّٰی ﴿۷﴾ وَ اَمَّا مَنْ جَآءَکَ یَسْعٰی ﴿۸﴾ وَ ہُوَ یَخْشٰی ﴿۹﴾ فَاَنْتَ عَنْہُ
تَلَہّٰی ﴿۱۰﴾ کَلَّاۤ اِنَّہَا تَذْکِرَۃٌ ﴿۱۱﴾ فَمَنْ شَآءَ ذَکَرَہٗ ﴿۱۲﴾ فِیْ صُحُفٍ مُّکَرَّمَۃٍ ﴿۱۳﴾ مَّرْفُوْعَۃٍ مُّطَہَّرَۃٍ ﴿۱۴﴾ بِاَیْدِیْ سَفَرَۃٍ ﴿۱۵﴾
کِرَامٍ بَرَرَۃٍ ﴿۱۶﴾ قُتِلَ الْاِنْسَانُ مَاۤ اَکْفَرَہٗ ﴿۱۷﴾ مِنْ اَیِّ شَیْءٍ خَلَقَہٗ ﴿۱۸﴾ مِنْ نُّطْفَۃٍ خَلَقَہٗ فَقَدَّرَہٗ ﴿۱۹﴾ ثُمَّ السَّبِیْلَ
یَسَّرَہٗ ﴿۲۰﴾ ثُمَّ اَمَاتَہٗ فَاَقْبَرَہٗ ﴿۲۱﴾ ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَہٗ ﴿۲۲﴾ کَلَّا لَمَّا یَقْضِ مَاۤ اَمَرَہٗ ﴿۲۳﴾ فَلْیَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰی
طَعَامِہٖۤ ﴿۲۴﴾ اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّا ﴿۲۵﴾ ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ شَقًّا ﴿۲۶﴾ فَاَنْۢبَتْنَا فِیْہَا حَبًّا ﴿۲۷﴾ وَّ عِنَبًا وَّ قَضْبًا ﴿۲۸﴾ وَّ
زَیْتُوْنًا وَّ نَخْلًا ﴿۲۹﴾ وَّ حَدَآئِقَ غُلْبًا ﴿۳۰﴾ وَّ فَاکِہَۃً وَّ اَبًّا ﴿۳۱﴾ مَّتَاعًا لَّکُمْ وَ لِاَنْعَامِکُمْ ﴿۳۲﴾ فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّۃُ ﴿۳۳﴾
یَوْمَ یَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِیْہِ ﴿۳۴﴾ وَ اُمِّہٖ وَ اَبِیْہِ ﴿۳۵﴾ وَ صَاحِبَتِہٖ وَ بَنِیْہِ ﴿۳۶﴾ لِکُلِّ امْرِیًٔ مِّنْہُمْ یَوْمَئِذٍ شَاْنٌ
یُّغْنِیْہِ ﴿۳۷﴾ وُجُوْہٌ یَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَۃٌ ﴿۳۸﴾ ضَاحِکَۃٌ مُّسْتَبْشِرَۃٌ ﴿۳۹﴾ وَ وُجُوْہٌ یَّوْمَئِذٍ عَلَیْہَا غَبَرَۃٌ ﴿۴۰﴾ تَرْہَقُہَا قَتَرَۃٌ ﴿۴۱﴾
اُولٰٓئِکَ ہُمُ الْکَفَرَۃُ الْفَجَرَۃُ ﴿۴۲﴾

आयत नं0 01 से 42

नोटः- इन आयतों के उतरने का क़िस्सा यह है कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुशरिकों के कुछ सरदारों को समझा रहे थे कि इतने में हज़रत अ़ब्दुल्लाह नाबीना सहाबी आए और कुछ पूछा आप को यह बात काटना बुरा लगा। आपने उनकी तरफ़ ध्यान नहीं दिया। और गुस्से से माथे में बल पड़ गये। क्योंकि आप चाहते थे कि अगर ये सरदार समझ जाएं और ईमान ले आएं तो दूसरों को समझाना भी आसान हो जाए। फिर ये आयतें उतरीं...

पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **नाराज़ हुए और मुंह फेर लिया(01) इसलिए कि उनके पास एक अन्धा आया(02)** (आगे तसल्ली के लिए कहा गया) **और आप को क्या पता शायद वो** (नाबीना आप के समझाने से पूरी तरह) **सुधर जाता(03) या** (कम से कम किसी ख़ास बात में) **नसीहत मान लेता तो उस को समझाना** (कुछ न कुछ) **फ़ाइदा पहुंचाता(04)** (तो) **जो आदमी** (दीन से) **बेपरवाई करता है(05) आप उस की तो फ़िक्र में पड़ते हैं(06) जब कि आप पर कोई इल्ज़ाम नहीं वो अगर न सुधरे(07) और जो आदमी आपके पास** (दीन के शौक़ में) **दौड़ता हुआ आता है(08) और वो** (अल्लाह से) **डरता है(09) आप उस से बेपरवाई करते हैं** (यानी जो दीन सीखने का शौक़ रखता है पहले उस पर ध्यान दें)**(10) हरगिज़** (आगे कभी आप ऐसा) **न कीजिए** (क्योंकि) **यह क़ुरआन** (सिर्फ़ एक) **नसीहत की चीज़** (है और आप के ज़िम्मे सिर्फ़ इस को पहुंचा देना) **है(11) तो जिस का जी चाहे इस को मानले** (और जो न माने वो जाने आप का कुछ नुक़सान नहीं)**(12) वो** (क़ुरआन तक़दीर की किताब के) **ऐसे सहीफ़ों में** (लिखा) **है जो** (अल्लाह के यहां) **इज़्ज़त वाले** (यानी पसन्द और मक़बूल) **हैं(13)** (और) **ऊंचे रूतबे वाले** (और) **पाक हैं** (यानी शैतानों ख़बीसों की वहां पहुंच नहीं)**(14) जो ऐसे लिखने वालों** (यानी फ़रिश्तों) **के हाथों में** (रहते) **हैं(15) कि वो बड़ी इज़्ज़त वाले** (और) **बहुत नेक** (हैं ये सब उस के अल्लाह की तरफ़ से होने की दलील) **हैं(16)** (और इसका इनकार करने वाले आदमी पर) **ख़ुदा की मार हो कि वो कैसा नाशुक्रा है(17)** (वो ज़रा सोचे कि) **अल्लाह तआ़ला ने उस को किस चीज़ से पैदा किया(18)** (आगे जवाब है कि) **मनी की बून्द से** (पैदा किया और बहुत से बदलाव के बाद) **उसकी सूरत बनाई फिर उस** (के बदन के हिस्सों) **को** (ख़ास) **अन्दाज़ से बनाया(19) फिर उस** (के निकलने) **का रास्ता आसान कर दिया** (वर्ना यह आसान काम न था तो यह अल्लाह की क़ुदरत की साफ़ दलील है)**(20) फिर** (उम्र पूरी होने के बाद) **उसको मौत दी फिर उसको क़ब्र में पहुंचा दिया** (चाहे पहले ही मिट्टी में रक्खा जाए या कुछ दिनों के बाद मिट्टी में मिल जाए)**(21) फिर जब अल्लाह चाहेगा उस को दोबारा ज़िन्दा कर देगा(22)** (मगर इन्सान ने इन बातों का) **हरगिज़** (शुक्र अदा) **नहीं** (किया और) **उसको जो हुक्म किया था उसको पूरा नहीं किया(23) इसलिए इन्सान को चाहिए कि** (अपने पैदा होने की शुरू की हालत और रहन सहन को देख कर सोचे जैसा कि) **अपने खाने की तरफ़ देखे(24) कि हमने ऊपर से बहुत सा पानी बरसाया(25) फिर** (पौधों की कोंपल निकालने के लिए) **अजीब तरह ज़मीन को फाड़ा(26) फिर हमने उसमें अनाज पैदा किया(27) और अंगूर और सब्ज़ी(28) और ज़ैतून और खजूर(29) और घने बाग़(30) और**

फल और चारा(31) (यानी सब चीज़ें पैदा कीं) **तुम्हारे लिए और** (कुछ चीज़ें) **तुम्हारे जानवरों के फ़ाइदे के लिए हैं(32)** (अब तो ये लोग नाशुक्री और कुफ़्र करते हैं) **फिर जिस वक़्त कानों को बहरा कर देने वाला शोर बरपा होगा** (यानी क़ियामत आएगी उस दिन सारी नाशुक्री का मज़ा पता चल जाएगा)(33) **जिस दिन** (ऐसा) **आदमी** (जिस का ऊपर बयान हुआ) **भागेगा अपने भाई से(34) और अपनी मां से और अपने बाप से(35) और अपनी बीवी से और अपने बेटों से(36)** (कोई किसी की हमदर्दी नहीं करेगा जिस की वजह यह है कि) **उनमें हर आदमी को** (अपनी ही) **ऐसी फ़िक्र होगी जो उसको दूसरी तरफ़ ध्यान न करने देगी(37)** (लेकिन) **बहुत से चेहरे उस दिन** (ईमान की वजह से) **चमकते दमकते होंगे(38)** (और ख़ुशी से) **हंसते हुए और खिले होंगे(39) और बहुत से चेहरों पर उस दिन** (कुफ़्र की वजह से) **सियाही होगी(40)** (और सियाही होने के साथ) **उन पर** (ग़म का) **मलाल छाया होगा(41) ये ही लोग काफ़िर व बदकार हैं** (काफ़िर से इशारा अ़क़ीदे की ख़राबी की तरफ़ और फ़ाजिर (बदकार) से बुरे कामों की तरफ़ है) **(42)।**

नोटः- ऊपर आयतों से मालूम हुआ कि मुसलमानों की तालीम और सुधार की कोशिशें ग़ैर मुस्लिमों को इस्लाम में दाख़िल करने की फ़िक्र से ज़्यादा ज़रूरी हैं। इसमें उन लोगों के लिए भी नसीहत है जो ग़ैर मुस्लिमों को इस्लाम से मानूस करने के लिए ऐसे काम कर बैठते हैं जिससे मुसलमानों के दिल में शक या शिकायतें पैदा हो जाती हैं। उन को इस क़ुरआनी हिदायत के हिसाब से मुसलमानों की हिफ़ाज़त और सुधार का ध्यान पहले करना चाहिये।

81-सूरत-तकवीर

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 29 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اِذَا الشَّمۡسُ کُوِّرَتۡ ۪ۙ﴿۱﴾ وَ اِذَا النُّجُوۡمُ انۡکَدَرَتۡ ۪ۙ﴿۲﴾ وَ اِذَا الۡجِبَالُ سُیِّرَتۡ ۪ۙ﴿۳﴾ وَ اِذَا الۡعِشَارُ عُطِّلَتۡ ۪ۙ﴿۴﴾ وَ اِذَا
الۡوُحُوۡشُ حُشِرَتۡ ۪ۙ﴿۵﴾ وَ اِذَا الۡبِحَارُ سُجِّرَتۡ ۪ۙ﴿۶﴾ وَ اِذَا النُّفُوۡسُ زُوِّجَتۡ ۪ۙ﴿۷﴾ وَ اِذَا الۡمَوۡءٗدَۃُ سُئِلَتۡ ۪ۙ﴿۸﴾ بِاَیِّ ذَنۡۢبٍ
قُتِلَتۡ ۚ﴿۹﴾ وَ اِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتۡ ۪ۙ﴿۱۰﴾ وَ اِذَا السَّمَآءُ کُشِطَتۡ ۪ۙ﴿۱۱﴾ وَ اِذَا الۡجَحِیۡمُ سُعِّرَتۡ ۪ۙ﴿۱۲﴾ وَ اِذَا الۡجَنَّۃُ اُزۡلِفَتۡ ۪ۙ﴿۱۳﴾
عَلِمَتۡ نَفۡسٌ مَّاۤ اَحۡضَرَتۡ ﴿ؕ۱۴﴾ فَلَاۤ اُقۡسِمُ بِالۡخُنَّسِ ۙ﴿۱۵﴾ الۡجَوَارِ الۡکُنَّسِ ۙ﴿۱۶﴾ وَ الَّیۡلِ اِذَا عَسۡعَسَ ۙ﴿۱۷﴾ وَ الصُّبۡحِ اِذَا
تَنَفَّسَ ۙ﴿۱۸﴾ اِنَّہٗ لَقَوۡلُ رَسُوۡلٍ کَرِیۡمٍ ۙ﴿۱۹﴾ ذِیۡ قُوَّۃٍ عِنۡدَ ذِی الۡعَرۡشِ مَکِیۡنٍ ۙ﴿۲۰﴾ مُّطَاعٍ ثَمَّ اَمِیۡنٍ ﴿ؕ۲۱﴾ وَ مَا
صَاحِبُکُمۡ بِمَجۡنُوۡنٍ ۚ﴿۲۲﴾ وَ لَقَدۡ رَاٰہُ بِالۡاُفُقِ الۡمُبِیۡنِ ۚ﴿۲۳﴾ وَ مَا ہُوَ عَلَی الۡغَیۡبِ بِضَنِیۡنٍ ۚ﴿۲۴﴾ وَ مَا ہُوَ بِقَوۡلِ شَیۡطٰنٍ
رَّجِیۡمٍ ۙ﴿۲۵﴾ فَاَیۡنَ تَذۡہَبُوۡنَ ﴿ؕ۲۶﴾ اِنۡ ہُوَ اِلَّا ذِکۡرٌ لِّلۡعٰلَمِیۡنَ ۙ﴿۲۷﴾ لِمَنۡ شَآءَ مِنۡکُمۡ اَنۡ یَّسۡتَقِیۡمَ ﴿ؕ۲۸﴾ وَ مَا تَشَآءُوۡنَ
اِلَّاۤ اَنۡ یَّشَآءَ اللّٰہُ رَبُّ الۡعٰلَمِیۡنَ ﴿۲۹﴾ ع

आयत नं0 01 से 29

जब सूरज में रौशनी न रहेगी(01) और जब सितारे टूट कर गिर जाएंगे(02) और जब पहाड़ चलाए जाएंगे(03) और जब दस महीने की गाभन ऊंटनियां छुटी फिरेंगी (ऊंटनी उस वक़्त अरब वालों में बड़ी दौलत समझी जाती थी यानी ऐसी हालत होगी कि उस की भी परवाह न रहेगी)**(04) और जब** (घबराहट के मारे) **सब जंगली जानवर इकट्ठे हो** (जाएंगे यानी एक दूसरे की दुशमनी भूल) **जाएंगे(05) और जब समन्दर भड़काए जाएंगे** (ये पहली 6 बातें तो पहले सूर फूंकने के वक़्त होंगी जब दुनिया आबाद होगी)**(06) और** (अगली 6 बातें दूसरे सूर फूंकने के बाद होंगी जिन का बयान यह है कि) **जब एक-एक क़िस्म के लोग इकट्ठे किये जाएंगे** (काफ़िर अलग मुसलमान अलग, फिर उनमें एक-एक तरीक़े के अलग-अलग)**(07) और जब ज़िन्दा गाड़ी हुई लड़की से पूछा**

जाएगा(08) कि उसे किस जुर्म में क़त्ल किया गया था (यानी बेटियों पर होने वाले ज़ुल्म व सितम पर फ़ैसला होगा)**(09) और जब आमाल नामे खोल दिये जाएंगे** (ताकि सब अपने-अपने किये काम देख लें)**(10) और जब आसमान खुल जाएगा** (और उसके खुलने से आसमान के ऊपर की चीज़ें दिखाई देने लगेंगी और फ़रिशते उतरेंगे)**(11) और जब दोज़ख़** (और ज़्यादा) **दहकाई जाएगी(12) और जब जन्नत नज़दीक कर दी जाएगी(13)** (तो उस वक़्त) **हर आदमी उन कामों को जान लेगा जो लेकर आया है(14) तो मैं क़सम खाता हूं उन सितारों की जो** (सीधे चलते-चलते) **पीछे को हटने लगते हैं(15)** (और फिर पीछे ही को) **चलते रहते हैं** (और कभी पीछे चलते- चलते अपनी जगह) **जा छुपते** (हैं ऐसे पांच सितारे) **हैं(16) और क़सम है रात की जब वो जाने लगे(17) और क़सम है सुबह की जब वो आने लगे(18) कि यह क़ुरआन** (अल्लाह का) **कलाम है एक इज़्ज़त वाले फ़रिशते** (यानी जिब्रील अलैहिस्सलाम) **का लाया हुआ(19) जो ताक़त वाला है** (और) **आसमान के मालिक के यहां रूतबे वाला है(20)** (और) **वहां** (यानी आसमानों में) **उसका कहना माना जाता है** (यानी फ़रिशते उस का कहना मानते हैं, और) **अमानतदार** (है कि वही को ठीक-ठीक पहुंचा देता है तो वही लाने वाला तो ऐसा) **है(21) और** (जिन पर वही उतरी उन के बारे में बयान है कि) **ये तुम्हारे साथ के रहने वाले** (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिनके बारे में तुम अच्छी तरह जानते हो) **कोई दीवाने नहीं हैं** (जैसा कि पैग़म्बरी का इनकार करने वाले कहते थे)**(22) और इन्होंने उस फ़रिशते को** (असली सूरत में आसमान के) **साफ़ किनारे पर देखा भी** (है यानी ऊंचे किनारे पर कि जहां साफ़ नज़र आता) **है(23) और ये पैग़म्बर ग़ैब की बातों** (यानी वही की बातों) **पर कंजूसी करने वाले भी नहीं** (कि पूरी बात न बताएं या बताने की कुछ फ़ीस लें)**(24) और यह क़ुरआन किसी शैतान मरदूद की कही हुई बात नहीं** (है बस यह अल्लाह का कलाम) **है(25) तो तुम लोग** (इस बारे में) **किधर को चले जा रहे** (हो कि पैग़म्बरी का इनकार कर रहे) **हो(26) बस यह** (क़ुरआन) **तो** (सभी) **दुनिया जहान वालों के लिए एक बड़ा नसीहत नामा है(27)** (और ख़ास कर) **ऐसे आदमी के लिए जो तुम में से सीधा चलना चाहे** (आम लोगों के वास्ते हिदायत इसलिए कि उन को सीधा रास्ता बता दिया और मोमिनो दीनदारों के वास्ते इस लिए कि उन को उनके ठिकाने पर पहुंचा दिया)**(28) और** (कुछ लोगों के नसीहत न मानने से इसके नसीहत नामा होने में शक न किया जाए क्योंकि) **तुम अल्लाह के बिना चाहे कुछ नहीं चाह सकते हो जो सारी दुनिया का रब** (है यानी असल में तो नसीहत है लेकिन इसका असर अल्लाह की मर्ज़ी पर है जो कुछ लोगों पर तो किसी ख़ास वजह से नहीं होता और कुछ लोगों पर होता) **है(29)।**

नोटः- पहले ज़माने में अरब में यह रस्म थी कि लड़की पैदा होने को शर्म की बात समझते थे और उस को ज़िन्दा ही ज़मीन में गाड़ दिया करते थे। इस्लाम ने इस बुरी रस्म को मिटाया।

मसअलाः- बच्चों को ज़िन्दा गाड़ देना या क़त्ल कर देना सख़्त और बड़ा गुनाह है और ज़ुल्म है। और चार महीने के बाद किसी हमल (गर्भ) को गिरा देना भी इसी हुक्म में है क्योंकि चौथे महीने में हमल में रूह पड़ जाती है और वो ज़िन्दा इन्सान के हुक्म में होता है। और चार महीने से पहले हमल का गिराना भी बिना बहुत मजबूरी के हराम है मगर चार महीने के बाद गिराने से गुनाह कम है। ऐसे ही फ़ैमिली प्लानिंग के लिए ऐसा तरीक़ा अपनाना जिससे सदा के लिए बच्चा होने का सिलसिला बन्द हो जाए इसकी भी शरीअत से इजाज़त नहीं है।

(मआ़रिफुल क़ुरआन)

82-सूरत-इनफ़ितार

''इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 19 आयतें हैं''

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ ۙ﴿١﴾ وَ اِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ۙ﴿٢﴾ وَ اِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ۙ﴿٣﴾ وَ اِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ ۙ﴿٤﴾ عَلِمَتْ نَفْسٌ
مَّا قَدَّمَتْ وَ اَخَّرَتْ ؕ﴿٥﴾ يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ ۙ﴿٦﴾ الَّذِيْ خَلَقَكَ فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ ۙ﴿٧﴾ فِيْۤ اَيِّ
صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ؕ﴿٨﴾ كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِ ۙ﴿٩﴾ وَ اِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ۙ﴿١٠﴾ كِرَامًا كَاتِبِيْنَ ۙ﴿١١﴾ يَعْلَمُوْنَ
مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿١٢﴾ اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ۚ﴿١٣﴾ وَ اِنَّ الْفُجَّارَ لَفِيْ جَحِيْمٍ ۚۖ﴿١٤﴾ يَّصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿١٥﴾ وَ مَا هُمْ عَنْهَا
بِغَآئِبِيْنَ ؕ﴿١٦﴾ وَ مَاۤ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ۙ﴿١٧﴾ ثُمَّ مَاۤ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ؕ﴿١٨﴾ يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ
شَيْـًٔا ؕ وَ الْاَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ﴿١٩﴾

आयत नं0 01 से 19

जब आसमान फट जाएगा(01) और जब सितारे (टूट कर) **झड़ जाऐंगे(02) और जब सब समन्दर** (खारा और मीठा) **बह** (जाएंगे और बह कर एक हो) **जाएंगे** (ये तीनों बातें पहले सूर फूंकने के वक़्त की हैं)**(03) और** (दूसरे सूर फूंकने की बातें आगे हैं यानी) **जब क़ब्रें उखाड़ दी जाएंगी** (यानी उन में के मुर्दे निकल खड़ें होंगे)**(04) हर आदमी** (उस वक़्त) **अपने अगले पिछले** (अच्छे बुरे) **कामों को जान लेगा(05) ऐ इन्सान तुझ को किस चीज़ ने अपने** (ऐसे) **महरबान रब से भूल में डाल रक्खा है(06) जिसने तुझ को** (इन्सान) **बनाया फिर तेरे बदन के हिस्सों को ठीक किया तुझ को ठीक बनाया(07)** (और) **जिस सूरत में चाहा तुझ को ढाल दिया(08) हरगिज़** (घमन्ड़) **नहीं** (करना चाहिए मगर तुम घमन्ड से बाज़ नहीं आते) **बल्कि** (घमन्ड में इतने बढ़ गये हो कि) **तुम** (ख़ुद) **इन्साफ़ होने ही को झुटलाते हो** (जिससे यह धोका और घमन्ड दूर हो सकता था)**(09) और** (यह तुम्हारा झुटलाना ख़ाली नहीं जाएगा बल्कि हमारी तरफ़ से) **तुम पर तुम्हारे सब कामों की देख रेख करने वाले** (फ़रिशते) **तैनात हैं(10)** (जो हमारे यहां) **इज़्ज़त वाले** (और तुम्हारे कामों के)

लिखने वाले हैं(11) **जो तुम्हारे सब कामों को जानते** (और लिखते) **हैं** (बस क़ियामत में तुम्हारे सब काम पेश होंगे और सब का बदला मिलेगा)(12) **नेक लोग बेशक आराम में होंगे**(13) **और बुरे लोग** (यानी काफ़िर) **बेशक दोज़ख़ में होंगे**(14) (और) **फ़ैसले के दिन उस में जाएंगे**(15) **और** (फिर) **उससे बाहर नहीं होंगे** (बल्कि उसमें सदा रहेंगे)(16) **और आप को कुछ पता है कि वो फ़ैसले का दिन कैसा है**(17) (और हम) **फिर** (दोबारा कहते हैं कि) **आप को कुछ पता है कि वो फ़ैसले का दिन कैसा है**(18) (आगे जवाब है कि) **वो ऐसा दिन है जिसमें किसी आदमी का किसी आदमी के नफ़े के लिए कुछ बस नहीं चलेगा** (यानी अपनी मर्ज़ी से सिफ़ारिश न कर सकेगा बल्कि सिफ़ारिश के लिए इजाज़त की ज़रूरत होगी) **और कुल हुकूमत उस दिन अल्लाह की होगी**(19)।

नोटः- हज़रत हसन बसरी रह० ने फ़रमाया कि कितने ही इन्सान ऐसे हैं कि अल्लाह तआला ने उनके ऐबों और गुनाहों पर पर्दा डाला हुआ है उनको रूसवा नहीं किया वो इस महरबानी व करम से और ज़्यादा ग़रूर और धोके में पड़ गये।

83-सूरत-मुतफ़्फ़िफ़ीन

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 36 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَيۡلٌ لِّلۡمُطَفِّفِيۡنَ ۙ﴿۱﴾ الَّذِيۡنَ اِذَا اكۡتَالُوۡا عَلَى النَّاسِ يَسۡتَوۡفُوۡنَ ۖ﴿۲﴾ وَ اِذَا كَالُوۡهُمۡ اَوۡ وَّ زَنُوۡهُمۡ يُخۡسِرُوۡنَ ؕ﴿۳﴾ اَلَا
يَظُنُّ اُولٰٓئِكَ اَنَّهُمۡ مَّبۡعُوۡثُوۡنَ ۙ﴿۴﴾ لِيَوۡمٍ عَظِيۡمٍ ۙ﴿۵﴾ يَّوۡمَ يَقُوۡمُ النَّاسُ لِرَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ ؕ﴿۶﴾ كَلَّاۤ اِنَّ كِتٰبَ
الۡفُجَّارِ لَفِىۡ سِجِّيۡنٍ ؕ﴿۷﴾ وَ مَاۤ اَدۡرٰكَ مَا سِجِّيۡنٌ ؕ﴿۸﴾ كِتٰبٌ مَّرۡقُوۡمٌ ؕ﴿۹﴾ وَيۡلٌ يَّوۡمَئِذٍ لِّلۡمُكَذِّبِيۡنَ ۙ﴿۱۰﴾ الَّذِيۡنَ
يُكَذِّبُوۡنَ بِيَوۡمِ الدِّيۡنِ ؕ﴿۱۱﴾ وَ مَا يُكَذِّبُ بِهٖۤ اِلَّا كُلُّ مُعۡتَدٍ اَثِيۡمٍ ۙ﴿۱۲﴾ اِذَا تُتۡلٰى عَلَيۡهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيۡرُ
الۡاَوَّلِيۡنَ ؕ﴿۱۳﴾ كَلَّا بَلۡ ٜ رَانَ عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ مَّا كَانُوۡا يَكۡسِبُوۡنَ ﴿۱۴﴾ كَلَّاۤ اِنَّهُمۡ عَنۡ رَّبِّهِمۡ يَوۡمَئِذٍ لَّمَحۡجُوۡبُوۡنَ ؕ﴿۱۵﴾
ثُمَّ اِنَّهُمۡ لَصَالُوا الۡجَحِيۡمِ ؕ﴿۱۶﴾ ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِىۡ كُنۡتُمۡ بِهٖ تُكَذِّبُوۡنَ ؕ﴿۱۷﴾ كَلَّاۤ اِنَّ كِتٰبَ الۡاَبۡرَارِ لَفِىۡ
عِلِّيِّيۡنَ ؕ﴿۱۸﴾ وَمَاۤ اَدۡرٰكَ مَا عِلِّيُّوۡنَ ؕ﴿۱۹﴾ كِتٰبٌ مَّرۡقُوۡمٌ ۙ﴿۲۰﴾ يَّشۡهَدُهُ الۡمُقَرَّبُوۡنَ ؕ﴿۲۱﴾ اِنَّ الۡاَبۡرَارَ لَفِىۡ نَعِيۡمٍ ۙ﴿۲۲﴾ عَلَى
الۡاَرَآئِكِ يَنۡظُرُوۡنَ ۙ﴿۲۳﴾ تَعۡرِفُ فِىۡ وُجُوۡهِهِمۡ نَضۡرَةَ النَّعِيۡمِ ۚ﴿۲۴﴾ يُسۡقَوۡنَ مِنۡ رَّحِيۡقٍ مَّخۡتُوۡمٍ ۙ﴿۲۵﴾ خِتٰمُهٗ مِسۡكٌ ؕ وَ
فِىۡ ذٰلِكَ فَلۡيَتَنَافَسِ الۡمُتَنَافِسُوۡنَ ؕ﴿۲۶﴾ وَ مِزَاجُهٗ مِنۡ تَسۡنِيۡمٍ ۙ﴿۲۷﴾ عَيۡنًا يَّشۡرَبُ بِهَا الۡمُقَرَّبُوۡنَ ؕ﴿۲۸﴾ اِنَّ الَّذِيۡنَ
اَجۡرَمُوۡا كَانُوۡا مِنَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا يَضۡحَكُوۡنَ ۖ﴿۲۹﴾ وَ اِذَا مَرُّوۡا بِهِمۡ يَتَغَامَزُوۡنَ ۖ﴿۳۰﴾ وَ اِذَا انۡقَلَبُوۡۤا اِلٰٓى اَهۡلِهِمُ انۡقَلَبُوۡا
فَكِهِيۡنَ ۖ﴿۳۱﴾ وَ اِذَا رَاَوۡهُمۡ قَالُوۡۤا اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَضَآلُّوۡنَ ۙ﴿۳۲﴾ وَ مَاۤ اُرۡسِلُوۡا عَلَيۡهِمۡ حٰفِظِيۡنَ ؕ﴿۳۳﴾ فَالۡيَوۡمَ الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا
مِنَ الۡكُفَّارِ يَضۡحَكُوۡنَ ۙ﴿۳۴﴾ عَلَى الۡاَرَآئِكِ ۙ يَنۡظُرُوۡنَ ؕ﴿۳۵﴾ هَلۡ ثُوِّبَ الۡكُفَّارُ مَا كَانُوۡا يَفۡعَلُوۡنَ ﴿۳۶﴾ ع

आयत नं0 01 से 36

बड़ी ख़राबी है नाप तौल में कमी करने वालों की(01) (जिन का हाल यह है) **कि जब लोगों से** (अपना हक़्) **नाप कर लेते हैं तो पूरा लेते हैं(02) और जब उन को नाप कर या तौल कर देते हैं तो घटा कर देते** (हैं लोगों से अपना हक़् पूरा लेना बुरा नहीं बल्कि दूसरों को कम देना बुरा है ख़ास कर जब कि अपना हक़् पूरा लेते) **हैं(03)** (आगे ऐसा करने वालों को डराया

गया है कि) **क्या उन लोगों को इस का यक़ीन नहीं है कि वो ज़िन्दा कर के उठाए जाएंगे**(04) **एक बड़े भारी दिन** (यानी क़ियामत) **में**(05) **जिस दिन सभी आदमी अल्लाह तआ़ला के सामने खड़े होंगे** (यानी उस दिन से डरना चाहिये और अपनी ग़लती से तौबा करना चाहिये)(06) **हरगिज़** (ऐसा) **नहीं** (जैसा कि ये लोग फ़ैसले के दिन का इनकार करते हैं बल्कि फ़ैसला ज़रूर होगा और) **बदकार** (यानी काफ़िर) **लोगों का आमाल नामा सिज्जीन में रहेगा** (वो एक जगह सातवीं ज़मीन में है जो काफ़िरों की रूहों का ठिकाना है)(07) **और** (आगे डराने के लिए सवाल है कि) **आप को कुछ पता है कि सिज्जीन** (में रक्खा हुआ आमाल नामा) **क्या चीज़ है**(08) **वो एक लिखी हुई** (और हिफ़ाज़त से रक्खी हुई) **किताब है**(09) (आगे कामों के बदले का बयान है कि) **उस दिन** (यानी क़ियामत के दिन) **झुटलाने वालों की बड़ी ख़राबी होगी**(10) **जो कि फ़ैसले के दिन को झुटलाते हैं**(11) **और उस** (फ़ैसले के दिन) **को तो वो आदमी ही झुटलाता है जो** (बन्दगी की) **हद से निकलने वाला** (और) **मुजरिम हो**(12) (और) **जब उसके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो यह कह देता है कि ये बेसनद बातें पहलों से कही चली आती हैं**(13) (और ये लोग फ़ैसले के दिन की ख़बर को ग़लत समझ रहे हैं) **हरगिज़** (ऐसा) **नहीं बल्कि** (उनके झुटलाने की वजह यह है कि) **उनके दिलों पर उनके बुरे कामों का ज़ंग बैठ गया है** (इसलिए हक़ बात को नहीं मानते)(14) **हरगिज़** (ऐसा) **नहीं** (जैसा ये लोग समझ रहे हैं) **ये लोग उस दिन** (एक तो) **अपने रब** (का दीदार देखने) **से रोक दिये जाएंगे**(15) **फिर** (ये ही नहीं बल्कि) **ये दोज़ख़ में जाएंगे**(16) **फिर** (इनसे) **कहा जाएगा कि यह वो चीज़ है जिस को तुम झुटलाया करते थे**(17) (और ये जो मोमिनों के नेक बदले और सवाब का इनकार करते हैं) **हरगिज़** (ऐसा) **नहीं** (बल्कि उनका सवाब ज़रूर मिलने वाला है कि) **नेक लोगों का आमाल नामा इल्लीयीन में रहेगा** (वो एक जगह सातवें आसमान पर है जो मोमिनों की रूहों का ठिकाना है)(18) **और** (आगे पूछते हैं कि) **आप को कुछ पता है कि इल्लीयीन** (में रक्खा हुआ आमाल नामा) **क्या चीज़ है**(19) **वो एक लिखी हुई किताब है**(20) **जिसको अल्लाह के नज़दीकी फ़रिश्ते** (शौक़ से) **देखते हैं** (और यह मोमिन की बड़ी इज़्ज़त है)(21) **नेक लोग बेशक बड़े आराम में होंगे**(22) **मसहरियों पर** (बैठे जन्नत की अजीब चीज़ें) **देखते होंगे**(23) (और) **आप उन के चेहरों पर आराम की ताज़गी देखोगे**(24) **और उन को पीने के लिए ख़ालिस शराब मुहर लगी हुई मिलेगी**(25) **जिस पर मुश्क की मुहर होगी, और तमन्ना करने वालों को ऐसी चीज़ की तमन्ना करनी** (चाहिए यानी नेक काम करके जन्नत की ऐसी नेमतें पाने की कोशिश करनी) **चाहिए**(26) **और उस शराब में मिलावट तसनीम के पानी से होगी**(27)

(और तसनीम) **एक ऐसी नहर है जिससे अल्लाह के नेक बन्दे पानी पियेंगे**(28) (और) **जो लोग मुजरिम** (यानी काफ़िर) **थे वो ईमान वालों को** (दुनिया में) **हंसा करते थे**(29) **और** (ईमान वाले) **जब इन काफ़िरों के सामने से होकर निकलते थे तो वो आपस में आँखों से इशारे करते** (थे मतलब यह कि उन का मज़ाक़ उड़ाते) **थे**(30) **और जब अपने घरों को जाते तो वहां भी उनकी बात करके दिल्लगी व मज़ाक़ करते थे**(31) **और जब इन मोमिनों को देखते तो यह कहा करते थे कि ये लोग सचमुच ग़लती पर हैं** (क्योंकि काफ़िर मुसलमानों को ग़लती पर समझते थे)(32) **हालांकि ये काफ़िर उन मुसलमानों पर चोकीदार बनाकर नहीं भेजे गये थे** (यानी उनको अपनी फ़िक्र करनी चाहिए इनके पीछे क्यों पड़ गये बस उन से दो ग़लती हुईं एक तो सच्चे दीन वालों का मज़ाक़ उड़ाना दूसरे अपने सुधार से बेफ़िक्री)(33) **इसलिए आज** (यानी क़ियामत के दिन) **ईमान वाले काफ़िरों पर हंसते होंगे**(34) **मसहरियों पर बैठे उन का हाल देख रहे होंगे** (कुछ खिड़कियां ऐसी होंगी जिन से जन्नती लोग दोज़ख़ी लोगों को देख सकेंगे बस उन का बुरा हाल देख कर बदले में उन पर हसेंगे)(35) **सचमुच काफ़िरों को उनके किये का ख़ूब बदला मिला**(36)

नोटः- ततफ़ीफ़ यानी दूसरे के हक़ में कमी करना सिर्फ़ नाप तौल ही नहीं बल्कि अल्लाह और बन्दों के हक़ों से जुड़ी हर चीज़ के साथ है जहां दूसरे के हक़ में कमी की जाए। यहां तक कि नौकर का अपने काम में कमी करना भी हक़ में कमी करना है। ऐसे ही नमाज़ में रूकू सजदे सही न करना अल्लाह के हक़ की अदाएगी में कमी करना है।

हदीसः-हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि पांच गुनाहों की (दुनिया में) सज़ा पांच चीज़ें हैं....

(1) जो आदमी एहद तोड़ता है अल्लाह तआला उस पर उसके दुशमन को हावी कर देता है।

(2) जो क़ौम अल्लाह के क़ानून को छोड़ कर दूसरे क़ानूनों पर फ़ैसले करते हैं उनमें फ़क़ीरी मुहताजी आम हो जाती है।

(3) जिस क़ौम में बेशर्मी और ज़िना आम हो जाए उस पर अल्लाह तआ़ला ताऊन (और दूसरी वबाई बीमारियां) भेज देता है।

(4) और जो लोग नाप तौल में कमी करने लगें अल्लाह तआ़ला उन को क़हत (अकाल) में पकड़ता है।

(5) जो लोग ज़कात अदा नहीं करते अल्लाह तआला उनसे बारिश को रोक देता है। (क़ुरतबी)

84-सूरत-इन्शिक़ाक़

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 25 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اِذَا السَّمَآءُ انۡشَقَّتۡ ۙ﴿۱﴾ وَ اَذِنَتۡ لِرَبِّہَا وَ حُقَّتۡ ۙ﴿۲﴾ وَ اِذَا الۡاَرۡضُ مُدَّتۡ ۙ﴿۳﴾ وَ اَلۡقَتۡ مَا فِیۡہَا وَ تَخَلَّتۡ ۙ﴿۴﴾ وَ اَذِنَتۡ
لِرَبِّہَا وَ حُقَّتۡ ؕ﴿۵﴾ یٰۤاَیُّہَا الۡاِنۡسَانُ اِنَّکَ کَادِحٌ اِلٰی رَبِّکَ کَدۡحًا فَمُلٰقِیۡہِ ۚ﴿۶﴾ فَاَمَّا مَنۡ اُوۡتِیَ کِتٰبَہٗ بِیَمِیۡنِہٖ ۙ﴿۷﴾
فَسَوۡفَ یُحَاسَبُ حِسَابًا یَّسِیۡرًا ۙ﴿۸﴾ وَّ یَنۡقَلِبُ اِلٰۤی اَہۡلِہٖ مَسۡرُوۡرًا ؕ﴿۹﴾ وَ اَمَّا مَنۡ اُوۡتِیَ کِتٰبَہٗ وَرَآءَ ظَہۡرِہٖ ۙ﴿۱۰﴾ فَسَوۡفَ
یَدۡعُوۡا ثُبُوۡرًا ۙ﴿۱۱﴾ وَّ یَصۡلٰی سَعِیۡرًا ؕ﴿۱۲﴾ اِنَّہٗ کَانَ فِیۡۤ اَہۡلِہٖ مَسۡرُوۡرًا ؕ﴿۱۳﴾ اِنَّہٗ ظَنَّ اَنۡ لَّنۡ یَّحُوۡرَ ۚ﴿ۛ۱۴﴾ بَلٰۤی ۚۛ اِنَّ رَبَّہٗ کَانَ
بِہٖ بَصِیۡرًا ؕ﴿۱۵﴾ فَلَاۤ اُقۡسِمُ بِالشَّفَقِ ۙ﴿۱۶﴾ وَ الَّیۡلِ وَ مَا وَسَقَ ۙ﴿۱۷﴾ وَ الۡقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ ۙ﴿۱۸﴾ لَتَرۡکَبُنَّ طَبَقًا عَنۡ طَبَقٍ ؕ﴿۱۹﴾ فَمَا
لَہُمۡ لَا یُؤۡمِنُوۡنَ ۙ﴿۲۰﴾ وَ اِذَا قُرِیٴَ عَلَیۡہِمُ الۡقُرۡاٰنُ لَا یَسۡجُدُوۡنَ ﴿ؕ۲۱﴾ بَلِ الَّذِیۡنَ کَفَرُوۡا یُکَذِّبُوۡنَ ﴿۫ۖ۲۲﴾ وَ اللّٰہُ اَعۡلَمُ بِمَا
یُوۡعُوۡنَ ﴿۫ۖ۲۳﴾ فَبَشِّرۡہُمۡ بِعَذَابٍ اَلِیۡمٍ ﴿ۙ۲۴﴾ اِلَّا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَہُمۡ اَجۡرٌ غَیۡرُ مَمۡنُوۡنٍ ﴿۲۵﴾

आयत नं0 01 से 25

जब (दूसरे सूर फूंकने के वक़्त) **आसमान फट जाएगा** (ताकि उससे फ़रिशतों की फ़ौज उतरे)(01) **और वो अपने रब का हुक्म सुन लेगा** (और मान लेगा) **और वो** (आसमान) **इसी लाइक़ है** (कि हुक्म को माने)(02) **और जब ज़मीन खींच कर बढ़ा दी जाएगी** (जिस तरह रबड़ खींची जाती है ताकि सब लोग उसमें समा जाएं)(03) **और** (वो ज़मीन) **अपने अन्दर की चीज़ों** (यानी मुर्दों) **को बाहर उगल देगी और** (सब मुर्दों से) **ख़ाली हो जाएगी**(04) **और** (वो ज़मीन) **अपने रब का हुक्म सुन** (कर मान) **लेगी और वो इसी लाइक़ है** (कि हुक्म को माने)(05) **ऐ इन्सान तू अपने रब के पास पहुंचने तक** (यानी मरने के वक़्त तक) **काम में कोशिश कर रहा है** (यानी कोई नेक काम में लगा हुआ है कोई बुरे काम में) **फिर** (क़ियामत में) **उस** (काम के बदले) **से जा मिलेगा**(06) **तो** (उस दिन) **जिस आदमी का आमाल नामा उसके दाहिने हाथ में मिलेगा**(07) **उससे तो आसान हिसाब लिया जाएगा**(08) **और वो** (उसके बाद) **अपने लोगों के**

पास ख़ुश-ख़ुश आएगा (और आसान हिसाब के अलग-अलग दर्जे हैं एक यह कि बिल्कुल सज़ा न हो दूसरा यह कि सज़ा तो हो मगर सदा के लिए न हो)(09) **और जिस आदमी का आमाल नामा** (उसके बाएं हाथ में) **उसकी पीठ पीछे से मिलेगा** (यानी काफ़िर आदमी)(10) **तो वो मौत को पुकारेगा** (जैसे मुसीबत में ऐसा करते हैं)(11) **और दोज़ख़ में जाएगा**(12) **यह आदमी** (दुनिया में) **अपने लोगों में ख़ुश-ख़ुश रहा करता था** (यहां तक कि ख़ुशी में मगन होकर आख़रत को झुटलाने लगा)(13) **उसने समझ रक्खा था कि उस को** (अल्लाह की तरफ़) **लौटना नहीं है**(14) (और लौटना) **क्यों न होता उस का रब उस को ख़ूब देखता** (था और किये कामों का बदला मिलना था इसलिए क़ियामत का आना ज़रूरी) **था**(15) **तो मैं क़सम खाकर कहता हूं शाम की लाली की**(16) **और रात की और उन चीज़ों की जिन को रात समेट** (कर जमा कर) **लेती है** (यानी वो सब जानदार जो रात को आराम करने के लिए अपने अपने ठिकानों पर आ जाते हैं)(17) **और चान्द की जब वो पूरा हो जाए**(18) (इन सब चीज़ों की क़सम खाकर कहता हूं) **कि तुम लोगों को ज़रूर एक हालत के बाद दूसरी हालत पर पहुंचना है** (और वो हालतें मौत फिर क़ब्र फिर क़ियामत की हालतें हैं)(19) **तो इन लोगों को क्या हुआ कि ईमान नहीं लाते**(20) **और** (हटधर्मी की यह हालत है कि) **जब उन के सामने क़ुरआन पढ़ा जाता है तो** (उस वक़्त भी अल्लाह की तरफ़) **नहीं झुकते**(21) **बल्कि** (बजाए झुकने के) **ये काफ़िर** (और उल्टा) **झुटलाते हैं**(22) **और अल्लाह को सब पता है जो कुछ ये लोग** (बुरे काम) **जमा कर रहे हैं**(23) **इसलिए** (उन कुफ़्र के कामों की सज़ा में) **आप इन को एक दर्दनाक अज़ाब की ख़बर देदीजिए**(24) **लेकिन जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये उनके लिए** (आख़रत में) **ऐसा बदला है जो कभी ख़त्म नहीं होगा**(25)

मसअलाः- इस सूरत की आयत न० 21 की तिलावत करने व सुनने वाले पर सजदाए तिलावत वाजिब हो जाता है।

नोटः- बुख़ारी की एक हदीस में हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन ''जिस आदमी से उसके आमाल का पूरा-पूरा हिसाब लिया जाए वो अज़ाब से न बचेगा''। और जिसको आसान हिसाब कहा गया वो असल में पूरा हिसाब नहीं बल्कि सिर्फ़ अल्लाह के सामने पेशी है। इससे मालूम हुआ कि मोमिनों के आमाल भी अल्लाह के सामने पेश तो होंगे मगर उनके ईमान की बरकत से उनके हर-हर अमल पर पकड़ न होगी। इसी का नाम आसान हिसाब है।

85-सूरत-बुरूज

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 22 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ۝١ وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ۝٢ وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ ۝٣ قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ۝٤ النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ۝٥
اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ۝٦ وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ۝٧ وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّاۤ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ
الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۝٨ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝٩ اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا
الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيْقِ ۝١٠ اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ
عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ۬ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ۝١١ اِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ۝١٢
اِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ ۝١٣ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ۝١٤ ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ ۝١٥ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ۝١٦ هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ
الْجُنُوْدِ ۝١٧ فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ ۝١٨ بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ تَكْذِيْبٍ ۝١٩ وَّاللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ مُّحِيْطٌ ۝٢٠ بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ
مَّجِيْدٌ ۝٢١ فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ۝٢٢

आयत नं0 01 से 22

नोटः- इस सूरत के बारे में एक क़िस्सा लिखा है कि एक ज़ालिम बादशाह ने मुसलमानों को इस्लाम से फेरने के लिए कोशिशें कीं और मजबूर करना चाहा और ऐलान किया कि जो आदमी इस्लाम से न फिरेगा उस को आग में जला दिया जाएगा। और इस काम के लिए ख़न्दक़ें (खाइयां) खोद कर उसमें आग दहकाई। और एक एक करके मुसलमानों को उसमें डाल दिया जाता था ताकि उस को जलता देख कर दूसरे डर जाएं और दीन से फिर जाएं। मगर कोई भी नहीं बदला। इस तरह वहां सब मुसलमान आग में जला कर शहीद कर दिये गये। फिर उस पर अल्लाह का अज़ाब आया और सारे ज़ालिम हलाक कर दिये गये।

क़सम है बुर्जों वाले आसमान की (बुर्जों से मुराद बड़े-बड़े सितारे हैं)(01) **और क़सम है उस दिन की जिस** (के आने) **का वादा किया गया है** (यानी क़ियामत के दिन की)(02) **और क़सम है हाज़िर होने वाले दिन** (यानी जुमा के दिन) **की और क़सम है उस दिन की जिस में लोगों की हाज़िरी होती** (है और वो अर्फ़े का दिन) **है**(03) (आगे क़सम का जवाब है कि) **अल्लाह की मार है उन ख़न्दक़ों वालों पर**(04) **यानी बहुत से ईंधन की आग वालों पर**(05) **जिस वक़्त वो लोग उस आग के पास बैठे हुए थे**(06) **और वो जो कुछ मुसलमानो के साथ ज़ुल्म व सितम कर रहे थे उस को** (बेरहमी से) **देख रहे थे** (इस में मुसलमानों को तसल्ली दी गई कि जो काफ़िर तुम्हें सता रहे हैं उन को भी अज़ाब हेगा चाहे दुनिया में भी वर्ना आख़रत में तो ज़रूर)(07) **और उन काफ़िरों ने उन मुसलमानों में कोई बुराई नहीं देखी थी सिवाए इसके कि वो** (उस) **अल्लाह पर ईमान लाए थे जो ज़बरदस्त** (ताक़त वाला) **और तारीफ़ों वाला है**(08) (और) **ऐसा कि आसमानों और ज़मीन में जिस की हुकूमत** (है सिर्फ़ ईमान लाने पर यह ज़ुल्म किया जब कि ईमान लाना कोई ख़ता नहीं) **है, और अल्लाह हर चीज़ को देख रहा** (है तो इस ज़ुल्म का अन्जाम भुगतना ज़रूरी) **है**(09) **यक़ीन जानो जिन्होंने मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों को सताया और फिर तौबा नहीं की तो उन के लिए दोज़ख़ का अज़ाब है और** (वहां ख़ासकर) **उनके लिए जलने का अज़ाब है** (और दूसरे अज़ाब भी हैं)(10) **बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किये उन के लिए** (जन्नत के) **ऐसे बाग़ है जिन के नीचे नहरें बहती होंगी,** (और) **यह बड़ी कामयाबी है**(11) **बेशक आप के रब की पकड़ बड़ी सख़्त है** (बस काफ़िरों को सख़्त सज़ा होना कोई हैरानी की बात नहीं)(12) **वो ही पहली बार भी पैदा करता है और दोबारा** (क़ियामत में) **भी पैदा करेगा**(13) (और आगे मोमिनों के लिए वादा है कि) **वो ही बड़ा मुआफ़ करने वाला** (और) **बहुत मुहब्बत करने वाला है**(14) (और) **अर्श का मालिक** (और) **बड़ी शान वाला है** (बस ईमान वालों के गुनाह मुआफ़ कर देगा और उन को अपना प्यारा बना लेगा)(15) **वो जो चाहे सब कुछ कर गुज़रता है**(16) (और आगे कुछ काफ़िरों का हाल व अन्जाम बयान होता है कि) **क्या आप को उन फ़ौजों का क़िस्सा पता है**(17) **यानी फ़िरऔन** (और उसके लोगों) **और समूद** (की क़ौम) **का** (कि किस तरह कुफ़्र किया और क्यों कर अज़ाब में पकड़े गये इससे मोमिनों को तसल्ली हासिल करना और काफ़िरों को डरना चाहिये मगर फिर भी काफ़िर अज़ाब से नहीं डरते)(18) **बल्कि ये काफ़िर** (ख़ुद क़ुरआन ही को) **झुटलाने में लगे हैं**(19) **और** (अन्जाम कार उस की सज़ा भुगतेंगे और) **अल्लाह** (की पकड़ से बच नहीं सकते क्योंकि उस) **ने उन को घेरे**

में लिया हुआ है(20) (और कुरआन ऐसी चीज़ नहीं जिसे झुटलाया जा सके) **बल्कि वो एक बड़ी शान की किताब है**(21) **जो तक़दीर की किताब में** (लिखा हुआ है जिसमें कोई बदलाव नहीं हो सकता वहां से बहुत हिफ़ाज़त के साथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास पहुंचाया जाता है, ऐसी सूरत में कुरआन को झुटलाना जहालत है जो सज़ा का हक़दार बना देता) **है**(22)।

नोटः- लिखा है कि जिन मोमिनों को उन ज़ालिमों ने आग की ख़न्दक़ों में डाला था अल्लाह तआला ने उन को तकलीफ़ से इस तरह बचा दिया कि आग के छूने से पहले ही उन के बदन की रूहें क़ब्ज़ कर ली गईं आग में मुर्दा जिस्म गिरे। फिर आग इतनी भड़क उठी कि ख़न्दक की हदों से निकल कर शहर में फैल गई और उन सब लोगों को उस आग ने जला दिया जो मुसलमानों के जलने का तमाशा देख रहे थे। (मज़हरी)

हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआ़ला की इस महरबानी और करम को देखो कि उन लोगों ने अल्लाह के वलियों को ज़िन्दा जलाकर उन का तमाशा देखा और अल्लाह तआ़ला इस पर भी उन को तौबा और मग़फ़िरत की तरफ़ दावत दे रहा है। (इब्ने कसीर)

86-सूरत-तारिक़

''इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 17 आयतें हैं''

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَ السَّمَآءِ وَ الطَّارِقِ ۙ﴿۱﴾ وَ مَاۤ اَدۡرٰىکَ مَا الطَّارِقُ ۙ﴿۲﴾ النَّجۡمُ الثَّاقِبُ ۙ﴿۳﴾ اِنۡ کُلُّ نَفۡسٍ لَّمَّا عَلَیۡہَا حَافِظٌ ؕ﴿۴﴾
فَلۡیَنۡظُرِ الۡاِنۡسَانُ مِمَّ خُلِقَ ؕ﴿۵﴾ خُلِقَ مِنۡ مَّآءٍ دَافِقٍ ۙ﴿۶﴾ یَّخۡرُجُ مِنۡۢ بَیۡنِ الصُّلۡبِ وَ التَّرَآئِبِ ؕ﴿۷﴾ اِنَّہٗ عَلٰی
رَجۡعِہٖ لَقَادِرٌ ؕ﴿۸﴾ یَوۡمَ تُبۡلَی السَّرَآئِرُ ۙ﴿۹﴾ فَمَا لَہٗ مِنۡ قُوَّۃٍ وَّ لَا نَاصِرٍ ؕ﴿۱۰﴾ وَ السَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجۡعِ ۙ﴿۱۱﴾ وَ الۡاَرۡضِ
ذَاتِ الصَّدۡعِ ۙ﴿۱۲﴾ اِنَّہٗ لَقَوۡلٌ فَصۡلٌ ۙ﴿۱۳﴾ وَّ مَا ہُوَ بِالۡہَزۡلِ ؕ﴿۱۴﴾ اِنَّہُمۡ یَکِیۡدُوۡنَ کَیۡدًا ۙ﴿۱۵﴾ وَّ اَکِیۡدُ کَیۡدًا ۚ﴿ۖ۱۶﴾
فَمَہِّلِ الۡکٰفِرِیۡنَ اَمۡہِلۡہُمۡ رُوَیۡدًا ﴿۱۷﴾ ع

आयत नं0 01 से 17

क़सम है आसमान की और उस चीज़ की जो रात को आने वाली है(01) और आप को कुछ पता है वो रात को आने वाली चीज़ क्या है(02) वो एक चमकदार सितारा है(03) (आगे क़सम का जवाब है कि) **कोई आदमी ऐसा नहीं जिस पर कोई कामों की देख रेख करने वाला** (फ़रिशता) **तैनात न हो** (मतलब यह कि इन किये कामों पर हिसाब होगा)**(04) तो इन्सान को** (क़ियामत की फ़िक्र करनी चाहिए अगर उस के आने में शक हो तो उस को) **देखना चाहिए कि उसे किस चीज़ से पैदा किया गया है(05) उसे एक उछलते पानी** (यानी मनी) **से पैदा किया गया है(06) जो पीठ और सीने के बीच** (यानी पूरे बदन के बीच) **से निकलता** (है तो जो एक बून्द से पूरा इन्सान बना देता है तो उस को दोबारा पैदा कर देना क्या मुश्किल) **है(07)** (तो इससे साबित हुआ कि) **वो उस को दोबारा पैदा करने की क़ुदरत रखता है(08)** (और यह दोबारा पैदा करना उस दिन होगा) **जिस दिन सब की पोल खुल जाएगी** (यानी सब छुपी बातें खुल कर सामने आ जाएंगी दुनिया की तरह बुराई छुपाई न जा सकेगी)**(09) फिर वो इन्सान न तो ख़ुद कुछ बचाव कर सकेगा और न उस का कोई मददगार होगा** (कि अज़ाब को उससे दूर कर दे)**(10) क़सम है**

आसमान की जिससे मूसलाधार बारिश होती है(11) **और ज़मीन की जो** (कोंपल निकलने के वक़्त) **फट जाती है**(12) **कि यह क़ुरआन सच और झूट में एक फ़ैसला कर देने वाला कलाम है**(13) **और यह कोई मज़ाक़ की चीज़ नहीं है**(14) **ये लोग** (सच्चे दीन की मुख़ालफ़त के लिए) **तरह-तरह की कोशिशें कर रहे हैं**(15) **और मैं भी** (इन की नाकामी और सज़ा के लिए) **तरह-तरह की कोशिशें कर रहा हूं** (और मेरी ही कोशिश कामयाब होगी)(16) **तो** (ऐ पैग़म्बर) **आप इन काफ़िरों** (की मुख़ालफ़त से घबराइये नहीं और न उन पर जल्दी अज़ाब आने की बात चाहें बल्कि उन) **को यूंही रहने दीजिए** (और ज़्यादा दिन नहीं बल्कि) **थोड़े ही दिनों रहने दीजिए** (फिर मैं उन पर अज़ाब भेजूंगा चाहे मौत से पहले या मौत के बाद)(17)।

नोटः- एक हदीस में है कि हर मोमिन पर अल्लाह तआला की तरफ़ से 360 फ़रिशते उस की हिफ़ाज़त के लिए तैनात हैं जो इन्सान के हर हर हिस्से की हिफ़ाज़त करते हैं। अगर ऐसा न होता तो शैतान उस को उचक ले जाएं। (क़ुरतबी)

87-सूरत-आला

''इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 19 आयतें हैं''

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ۙ﴿۱﴾ الَّذِیْ خَلَقَ فَسَوّٰی ۙ﴿۲﴾ وَ الَّذِیْ قَدَّرَ فَهَدٰی ۙ﴿۳﴾ وَ الَّذِیْۤ اَخْرَجَ الْمَرْعٰی ۙ﴿۴﴾ فَجَعَلَهٗ
غُثَآءً اَحْوٰی ؕ﴿۵﴾ سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰۤی ۙ﴿۶﴾ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ یَعْلَمُ الْجَهْرَ وَ مَا یَخْفٰی ؕ﴿۷﴾ وَ نُیَسِّرُكَ لِلْیُسْرٰی
ۚۖ﴿۸﴾ فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰی ؕ﴿۹﴾ سَیَذَّكَّرُ مَنْ یَّخْشٰی ۙ﴿۱۰﴾ وَ یَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَی ۙ﴿۱۱﴾ الَّذِیْ یَصْلَی النَّارَ الْكُبْرٰی ۚ﴿۱۲﴾
ثُمَّ لَا یَمُوْتُ فِیْهَا وَ لَا یَحْیٰی ؕ﴿۱۳﴾ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰی ۙ﴿۱۴﴾ وَ ذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰی ؕ﴿۱۵﴾ بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَیٰوةَ
الدُّنْیَا ۚۖ﴿۱۶﴾ وَ الْاٰخِرَةُ خَیْرٌ وَّ اَبْقٰی ؕ﴿۱۷﴾ اِنَّ هٰذَا لَفِی الصُّحُفِ الْاُوْلٰی ۙ﴿۱۸﴾ صُحُفِ اِبْرٰهِیْمَ وَ مُوْسٰی ۧ﴿۱۹﴾

आयत नं0 01 से 19

(ऐ पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप** (और जो मोमिन आप के साथ हैं) **अपने** (उस) **रब के नाम की तस्बीह किया कीजिए जिस की शान सब से ऊंची है(01)** (और) **जिसने** (हर चीज़ को) **पैदा किया फिर** (उसको) **ठीक-ठीक बनाया(02) और जिसने** (जानदारों की ज़रूरत की चीज़ों को) **ठहराया फिर** (उन को उन चीज़ों की तरफ़) **राह बताई** (यानी उनके दिलों में उन चीज़ों की चाहत पैदा कर दी)**(03) और जिसने** (हरा भरा) **चाराः** (ज़मीन से) **निकाला(04) फिर उस को** (सुखा कर) **काला कूड़ा कर** (दिया इसमें इन्सान को उस का अन्जाम बता) **दिया(05)** (और ऐ पैग़म्बर) **हम जितना कुरआन** (उतारते जाएंगे) **आप को पढ़ा दिया करेंगे** (यानी याद करा दिया करेंगे) **फिर आप** (उसमें से कोइ हिस्सा) **नहीं भूलेंगे(06) मगर जितना** (भुलाना) **अल्लाह चाहे,** (और इसमें कुछ भेद हैं क्योंकि) **वो हर खुली और छुपी बात को जानता** (है बस जैसा ठीक समझे वैसा करता है)**(07) और** (जैसा हम आप के लिए कुरआन का याद होना आसान कर देंगे इसी तरह) **हम आसान शरीअ़त** (के हर हुक्म पर चलने) **के लिए आप को आसानी दे** (देंगे यानी समझना भी आसान होगा और अमल करना भी आसान होगा और तबलीग़ में भी आसानी होगी और रूकावटें भी दूर कर) **देंगे(08) तो** (जब हम आप के लिए वही से जुड़ा हर काम आसान कर देने का वादा

करते हैं तो) **आप नसीहत किया कीजिए अगर नसीहत करना फ़ाइदा देता हो** (और यह तो जानते ही हैं कि नसीहत करना सदा फ़ाइदा ही देता है)**(09) वो आदमी ही** (मगर) **नसीहत मानता है जो** (अल्लाह से) **डरता है**(10) **और जो बदनसीब है वो उससे दूर भागता है**(11) **जो** (अन्जामकार) **बड़ी आग में जाएगा** (यानी दोज़ख़ की आग में जो दुनिया की सब आगों से बड़ी है)(12) **फिर** (उससे बढ़ कर यह कि) **न उसमें मर ही जाएगा और न** (आराम की ज़िन्दगी) **जियेगा**(13) **कामयाब हुआ जो आदमी** (क़ुरआन सुनकर बुरे अक़ीदे और बुरी आदतों से) **पाक हो गया**(14) **और अपने रब का नाम लेता और नमाज़ पढ़ता रहा**(15) (मगर ऐ इनकार करने वालो तुम क़ुरआन को सुनकर उस को नहीं मानते और आख़रत का सामान नहीं करते) **बल्कि तुम दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द करते हो**(16) **जब कि आख़रत** (दुनिया से) **बहुत अच्छी और सदा रहने वाली है**(17) (और यह बात सिर्फ़ क़ुरआन में ही नहीं बल्कि) **यह बात पहले** (आसमानी) **सहीफ़ों में भी है**(18) **यानी इब्राहीम व मूसा** (अलैहिमुस्सलाम) **के सहीफ़ों में**(19)।

नोटः- जो नाम अल्लाह के लिए ख़ास है वो किसी मख़लूक़ के लिए इस्तेमाल करना जाइज़ नहीं। जैसे कुछ लोग अब्दुर्रहमान को रहमान और अब्दुल ख़ालिक़ को ख़ालिक़ कह कर पुकारते हैं और यह नहीं समझते कि इसका कहने वाला और सुनने वाला दोनों गुनाहगार होते हैं।

और अल्लाह तआला को सिर्फ़ उन नामों से पुकारना चाहिये जो ख़ुद अल्लाह तआला ने अपने लिए बयान फ़रमाए हैं या अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बताए हैं। उनके सिवा किसी और नाम से उस को पुकारना जाइज़ नहीं।

88-सूरत-ग़ाशिया

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 26 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ؕ ١ وُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ خَاشِعَةٌ ۙ ٢ عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ ۙ ٣ تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً ۙ ٤ تُسْقٰى مِنْ
عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ؕ ٥ لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ ۙ ٦ لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ؕ ٧ وُجُوْهٌ يَّوْمَىِٕذٍ نَّاعِمَةٌ ۙ ٨
لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۙ ٩ فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۙ ١٠ لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ؕ ١١ فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۘ ١٢ فِيْهَا سُرُرٌ
مَّرْفُوْعَةٌ ۙ ١٣ وَّ اَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ۙ ١٤ وَّ نَمَارِقُ مَصْفُوْفَةٌ ۙ ١٥ وَّ زَرَابِيُّ مَبْثُوْثَةٌ ؕ ١٦ اَفَلَا يَنْظُرُوْنَ اِلَى
الْاِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۗ ١٧ وَ اِلَى السَّمَآءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۗ ١٨ وَ اِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ۗ ١٩ وَ اِلَى الْاَرْضِ كَيْفَ
سُطِحَتْ ۗ ٢٠ فَذَكِّرْ ۗ اِنَّمَاۤ اَنْتَ مُذَكِّرٌ ؕ ٢١ لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ۙ ٢٢ اِلَّا مَنْ تَوَلّٰى وَ كَفَرَ ۙ ٢٣ فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ
الْعَذَابَ الْاَكْبَرَ ؕ ٢٤ اِنَّ اِلَيْنَاۤ اِيَابَهُمْ ۙ ٢٥ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ٢٦

आयत नं0 01 से 26

आप को उस छा जाने वाले क़िस्से (यानी क़ियामत) **का कुछ पता भी है(01) बहुत से चेहरे उस दिन उतरे हुए होंगे(02)** (और) **मुसीबत झेलते हुए थकन से चूर होंगे(03)** (और) **दोज़ख़ की आग में जाएंगे(04)** (और) **उन्हें** (गर्म) **खौलते** (हुए) **चश्मे से पानी पिलाया जाएगा(05)** (और) **उन को सिवाए कान्टेदार झाड़ के और कोई खाना नसीब नहीं होगा(06) जो न तो** (खाने वालों के) **जिस्म को ताक़त देगा और न** (उनकी) **भूक मिटाएगा(07)** (और आगे जन्नत वालों का ज़िक्र है कि) **बहुत से चेहरे उस दिन तरोताज़ाः** (और खिले) **होंगे(08)** (और) **अपने नेक कामों की वजह से ख़ुश होंगे(09)** (और) **आलीशान जन्नत में होंगे(10) जिस में वो कोई बेहूदा** (और दिल दुखाने वाली) **बात न सुनेंगे(11)** (और) **उस जन्नत में** (नहरों की तरह) **बहते हुए चश्मे होंगे(12)** (और) **उस** (जन्नत) **में ऊंचे तख़्त बिछे हैं(13) और रक्खे हुए पियाले मौजूद हैं** (यानी यह सामान उसके सामने ही मौजूद होगा ताकि जब पीने को जी चाहे तो देर न

लगे)(14) **और बराबर लगे हुए गद्दे तकिये हैं**(15) **और सब तरफ़ क़ालीन ही क़ालीन बिछे हुए** (हैं कि जहां चाहे आराम कर सकते) **हैं**(16) (और इन सब बातों को सुनकर जो कुछ लोग क़ियामत का इनकार करते हैं तो उन की ग़लती है क्योंकि) **क्या ये लोग नहीं देखते ऊंट को कि किस तरह अजीब तौर पर पैदा किया गया है**(17) **और आसमान को** (नहीं देखते) **कि किस तरह ऊंचा किया गया है**(18) **और पहाड़ों को** (नहीं देखते) **कि किस तरह खड़े किये गये हैं**(19) **और ज़मीन को** (नहीं देखते) **कि किस तरह बिछाई गई है** (यानी इन चीज़ों को देख कर अल्लाह तआ़ला की कुदरत के बारे में नहीं सोचते ताकि उस का क़ियामत लाने की क़ुदरत रखना समझ लेते)(20) **तो** (जब ये लोग दलीलों के बावजूद नहीं सोचते तो) **आप** (भी उन की फ़िक्र में ज़्यादा न पड़िए बल्कि सिर्फ़) **नसीहत कर दिया कीजिए, क्योंकि आप तो बस नसीहत करने वाले हैं**(21) (और) **आप इन पर** (ऐसे) **ज़िम्मेदार नहीं हैं** (कि इन के कामों की आप से पूछताछ हो)(22) **हां मगर जो कोई मुंह मोड़ेगा और कुफ़्र करेगा**(23) **तो अल्लाह तआ़ला उस को** (आख़रत में) **बड़ी सज़ा देगा**(24) (क्योंकि) **हमारे ही पास उन को आना होगा**(25) **फिर हमारा ही काम उनसे हिसाब लेना है** (आप ज़्यादा ग़म में न पड़िए)(26)

नोटः- हज़रत उमर रज़ि० ने एक बूढ़े ईसाई जोगी को देखा जो अपने मज़हब की इबादत में मेहनत करते-करते बहुत कमज़ोर हो गया था तो आप उस को देख कर रो पड़े। लोगों ने रोने की वजह पूछी तो हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि मुझे इस बूढ़े के हाल पर रहम आया कि जिस मतलब के लिए इसने इतनी मेहनत की मगर उस मतलब को नहीं पा सका यानी अल्लाह को राज़ी नहीं कर सका। और इस पर हज़रत उमर ने इस सूरत (ग़ाशिया) की आयत न० २ व ३ तिलावत की जिन का मतलब है कि "बहुत से चेहरे उस दिन (यानी क़ियामत के दिन) उतरे हुए होंगे। (और) मुसीबत झेलते हुए थकन से चूर होंगे"।

89-सूरत-फ़ज्र

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 30 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَالْفَجْرِ ۝١ وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۝٢ وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۝٣ وَالَّيْلِ اِذَا يَسْرِ ۝٤ هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ۝٥
اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۝٦ اِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۝٧ الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ۝٨ وَثَمُوْدَ
الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۝٩ وَفِرْعَوْنَ ذِي الْاَوْتَادِ ۝١٠ الَّذِيْنَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ۝١١ فَاَكْثَرُوْا فِيْهَا الْفَسَادَ ۝١٢
فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ۝١٣ اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ۝١٤ فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ وَ
نَعَّمَهٗ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَكْرَمَنِ ۝١٥ وَاَمَّآ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَهَانَنِ ۝١٦ كَلَّا بَلْ لَّا
تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ۝١٧ وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝١٨ وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ۝١٩ وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ
حُبًّا جَمًّا ۝٢٠ كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۝٢١ وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝٢٢ وَجِايْٓءَ يَوْمَئِذٍ بِجَهَنَّمَ ۙ
يَوْمَئِذٍ يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ۝٢٣ يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِيْ ۝٢٤ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ
عَذَابَهٗٓ اَحَدٌ ۝٢٥ وَّلَا يُوْثِقُ وَثَاقَهٗٓ اَحَدٌ ۝٢٦ يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۝٢٧ ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً
مَّرْضِيَّةً ۝٢٨ فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ۝٢٩ وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ۝٣٠

आयत नं0 01 से 30

क़सम है फ़ज्र के वक़्त की(01) और (ज़िल हिज्जा के महीनों की) **दस रातों** (यानी दस तारीख़ों) **की** (कि वो बहुत बड़े रूतबे वाली हैं)**(02) और जुफ़्त की और ताक़ की** (जुफ़्त दसवीं तारीख़ ज़िल हिज्जा की और ताक़ नवीं तारीख़)**(03) और क़सम है रात की जब वो चलने** (लगे यानी बीतने) **लगे(04) क्या एक समझदार** (को यह यक़ीन दिलाने) **के लिए ये क़समें काफ़ी नहीं हैं** (कि आख़रत में किये कामों का बदला मिलना है)**(05) क्या आप को पता नहीं है कि आप के रब ने कैसा बरताव किया आद क़ौम के साथ(06) यानी इरम क़ौम के साथ जिन के डील डौल**

खम्बे जैसे थे(07) और जिन की बराबर ज़ोर व ताक़त में दुनिया के शहरों में कोई और क़ौम पैदा नहीं की गई(08) और (आगे आद के बाद हलाक होने वाली दूसरी उम्मतों का हाल बयान करते हैं कि आप को मालूम है कि) **समूद क़ौम के साथ** (कैसा बरताव किया) **जो** (क़ुरा की) **घाटी में** (पहाड़ के) **पत्थर तराशा करते** (थे और मकान बनाया करते) **थे(09) और कीलों वाले फ़िरऔन के साथ** (क्या बरताव किया जो लोगों को सज़ा देने के लिए उनके हाथों व पैरों में कीलें गाड़ दिया करता था)(10) **ये वो लोग हैं जिन्होंने शहरों में सर उठा रक्खा था(11) और उनमें बहुत फ़साद मचा रक्खा था(12) इसलिए आप के रब ने उन पर अज़ाब का कोड़ा बरसाया** (यानी अज़ाब भेजा)(13) **बेशक आप का रब** (नाफ़रमानों की) **घात में** (है जिन में से पहलों को तो हलाक कर दिया और इन को अज़ाब देने वाला) **है(14) तो** (चाहिए तो यह था कि इन क़िस्सों से सबक़ लेते और सज़ा वाले कामों से बचते लेकिन काफ़िर) **आदमी** (का यह हाल है कि अज़ाब के काम करता है जिन सब की जड़ दुनिया की मुहब्बत है तो उस) **को जब उस का रब आज़माता है यानी नेमतें व इ़ज़्ज़त देता है** (जैसे माल व रूतबा जिसमें उस की शुक्रगुज़ारी देखना होता है) **तो वो** (उसको अपना ज़रूरी हक़ समझ कर घमन्ड़ से) **कहता है कि मेरे रब ने मेरी इ़ज़्ज़त की है** (यानी मैं उस का चहेता हूं कि मुझ को ऐसी नेमतें दीं)(15) **और जब उस को** (दूसरी तरह) **आज़माता है यानी उस की रोज़ी उस पर घटा देता है** (जिससे उस के सब्र को आज़माना है) **तो वो** (शिकायत करता है और) **कहता है कि मेरे रब ने मेरी तौहीन की** (है कि मैं जिन नेमतों का हक़दार था वो नहीं दी यानी मुझ से नाराज़ है मतलब यह कि काफ़िर दुनिया ही को असल समझता) **है(16)** (आगे कहा गया कि) **हरगिज़ ऐसा नहीं** (यानी दुनिया की चीज़ों का होना या न होना असल नहीं और सज़ा की वजह सिर्फ़ यह नाशुक्री और बेसब्री ही नहीं और दूसरी बुराइयां भी हैं जैसे) **तुम लोग यतीम की** (कुछ) **इ़ज़्ज़त** (और ख़ातिर) **नहीं करते** (हो यानी उस का ध्यान नहीं रखते बल्कि सताते हो और उस का माल खा जाते) **हो(17) और दूसरों को भी ग़रीबों को खाना देने को नहीं उकसाते** (हो यानी दूसरों का हक़ न ख़ुद अदा करते हो और न औरों को अदा करने को कहते) **हो(18) और** (तुम लोग) **मीरास का सारा माल समेट कर खा जाते** (हो यानी दूसरे वारिसों का हिस्सा भी खा जाते) **हो(19) और** (तुम लोग) **माल से बहुत ही मुहब्बत रखते हो(20) हरगिज़ ऐसा नहीं** (जैसा तुम समझते हो कि इन कामों पर अज़ाब न होगा ज़रूर होगा और उस वक़्त होगा) **जिस वक़्त ज़मीन** (के ऊंचे हिस्से जैसे पहाड़) **को तोड़ कर** (और) **रेत** (बनाकर ज़मीन को बराबर) **कर दिया जाएगा(21) और आप का रब और फ़रिश्तों की फ़ौजें** (हश्र के मैदान में) **आएंगे** (यह हिसाब के वक़्त होगा,

और अल्लाह का आना इस का मतलब वो ख़ुद ही जानता है)(22) **और उस दिन दोज़ख़ को सामने लाया जाएगा, उस दिन इन्सान को समझ आएगी और अब समझने का मौक़ा कहां रहा** (यानी अब समझने से क्या फ़ाइदा हो सकता है क्योंकि वो फ़ैसले की जगह है कामों की नहीं)(23) **बस** (उस दिन वो) **कहेगा काश में इस आख़रत की ज़िन्दगी के लिए कुछ नेक काम आगे भेज लेता**(24) **बस उस दिन न तो अल्लाह के अज़ाब की बराबर कोई अज़ाब देने वाला होगा**(25) **और न उसके जकड़ने के बराबर कोई जकड़ने वाला** (होगा, यानी ऐसा क़ैद करनेवाला और ऐसी सख़्त सज़ा देने वाला दुनिया में कोई न) **होगा**(26) (और जो अल्लाह का हुक्म मानने वाले थे उन को कहा जाएगा कि) **ऐ चैन पाने वाली रूह**(27) **तू अपने रब** (की रहमत के साय) **की तरफ़ चल इस तरह कि तू उससे ख़ुश और वो तुझ से ख़ुश**(28) **फिर** (उधर चल कर) **तू मेरे ख़ास बन्दों में शामिल होजा**(29) **और मेरी जन्नत में दाख़िल होजा**(30)।

नोटः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "जो आदमी अल्लाह तआला से मिलने को पसन्द करता है अल्लाह तआला भी उससे मिलने को पसन्द करता है। और जो अल्लाह तआला से मिलने को नापसन्द करता है तो अल्लाह तआला भी उससे मिलने को नापसन्द करता है"। यह हदीस सुनकर हज़रत आइशा रज़ि० ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सवाल किया कि अल्लाह से मिलना तो मौत से हो सकता है लेकिन मौत तो हमें या किसी को भी पसन्द नहीं। आप ने फ़रमाया "यह बात नहीं असलीयत यह है कि मोमिन को मौत के वक़्त फ़रिशतों के वास्ते से अल्लाह के राज़ी होने और जन्नत की ख़ुशख़बरी दी जाती है जिस को सुन कर उस को मौत ज़्यादा प्यारी हो जाती है। इसी तरह काफ़िर को मौत के वक़्त अज़ाब और सज़ा सामने कर दी जाती है। इस लिए उसको उस वक़्त मौत से बढ़कर कोई चीज़ बुरी और नागवार मालूम नहीं होती"। (मतलब यह है कि मौत की मुहब्बत या नागवारी इस वक़्त की नहीं बल्कि मरने के नज़दीक जो आदमी मरने और अल्लाह से मिलने पर राज़ी है अल्लाह भी उससे राज़ी है)। (मज़हरी)

90-सूरत-बलद

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 20 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۙ﴿۱﴾ وَ اَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۙ﴿۲﴾ وَ وَالِدٍ وَّ مَا وَلَدَ ۙ﴿۳﴾ لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِیْ كَبَدٍ ؕ﴿۴﴾
اَیَحْسَبُ اَنْ لَّنْ یَّقْدِرَ عَلَیْهِ اَحَدٌ ۘ﴿۵﴾ یَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ؕ﴿۶﴾ اَیَحْسَبُ اَنْ لَّمْ یَرَهٗۤ اَحَدٌ ؕ﴿۷﴾ اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ
عَیْنَیْنِ ۙ﴿۸﴾ وَ لِسَانًا وَّ شَفَتَیْنِ ۙ﴿۹﴾ وَ هَدَیْنٰهُ النَّجْدَیْنِ ۚ﴿۱۰﴾ فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۖ﴿۱۱﴾ وَ مَاۤ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ؕ﴿۱۲﴾ فَكُّ
رَقَبَةٍ ۙ﴿۱۳﴾ اَوْ اِطْعٰمٌ فِیْ یَوْمٍ ذِیْ مَسْغَبَةٍ ۙ﴿۱۴﴾ یَّتِیْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۙ﴿۱۵﴾ اَوْ مِسْكِیْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ؕ﴿۱۶﴾ ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِیْنَ
اٰمَنُوْا وَ تَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَ تَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ؕ﴿۱۷﴾ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْمَیْمَنَةِ ؕ﴿۱۸﴾ وَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِاٰیٰتِنَا هُمْ اَصْحٰبُ
الْمَشْئَمَةِ ؕ﴿۱۹﴾ عَلَیْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ﴿۲۰﴾

आयत नं0 01 से 20

मैं क़सम खाता हूं इस शहर (मक्का) **की(01)** (कि ऐ पैग़म्बर) **आप को इस शहर में लड़ाई हलाल होने वाली है** (जो कि मक्के की जीत के दिन जाइज़ कर दी गई थी)**(02) और क़सम है बाप की** (यानी आदम अलैहिस्सलाम की) **और औलाद** (की यानी सारी दुनिया) **की(03)** (आगे क़सम का जवाब है) **कि हमने इन्सान को बड़ी मेहनत में पैदा किया** (है यानी उम्र भर किसी न किसी परेशानी में घिरा रहता है इसलिए चाहिए तो यह था कि उसमें लाचारी और ताबेदारी पैदा हो जाती लेकिन काफ़िर इन्सान फिर भी भूल में पड़ा) **है(04) क्या वो यह समझता है कि उस पर किसी का बस नहीं चलेगा** (यानी क्या अल्लाह की कुदरत से अपने को बाहर समझता है)**(05) कहता है कि मैंने इतना ज़्यादा माल ख़र्च कर दिया** (है यानी एक तो डींग मारता है और माल को इस्लाम की दुशमनी में ख़र्च करता) **है(06) क्या वो समझता है कि उसको किसी ने नहीं देखा** (यानी अल्लाह तआला तो उसके किये कामों को देख रहे हैं)**(07) क्या हमने उस को दो आँखें नहीं दीं(08) और एक ज़बान और दो होंट** (नहीं दिये)**(09) और फिर उसको दोनों रास्ते** (भलाई व

बुराई के) **बता दिये** (ताकि बुराई के रास्ते से बचे और भलाई के रास्ते पर चले तो चाहिए था कि अल्लाह के हुक्मों का ताबेदार होता)(10) **मगर वो आदमी दीन की घाटी में से होकर नहीं निकला** (दीन के कामों को घाटी इसलिए कहा कि जी पर भारी हैं)(11) **और आप को पता है कि घाटी** (का) **क्या** (मतलब) **है**(12) **वो किसी गर्दन का** (ग़ुलामी से) **छुड़ा देना** (है यानी ग़ुलाम आज़ाद करना) **है**(13) **या खाना खिलाना भूक के दिन** (यानी ख़ासकर ऐसे दिन जिसमें वो भूका हो)(14) **किसी रिश्तेदार यतीम को**(15) **या बहुत ग़रीब को** (यानी अल्लाह के इन हुक्मों को पूरा करना चाहिए था)(16) **फिर** (सबसे बढ़ कर यह कि) **उन लोगों में से हुआ जो ईमान लाए और एक दूसरे को** (ईमान की) **पाबन्दी की नसीहत की और एक दूसरे को** (लोगों पर) **तरस खाने की** (और न सताने की) **नसीहत की**(17) **ये ही लोग दाहिने वाले हैं** (यानी ख़ुशनसीब मोमिन जिन का आमाल नामा दाहिने हाथ में मिलेगा)(18) **और जो लोग हमारी आयतों का इनकार करते हैं वो लोग बाएं वाले हैं** (यानी दोज़ख़ी लोग जिन का आमाल नामा बाएं हाथ में मिलेगा)(19) **वो आग में घिरे होंगे जिस को** (उन पर) **बन्द कर दिया जाएगा** (यानी दोज़ख़ियों को दोज़ख़ में भर कर आगे से दरवाज़ा बन्द कर देंगे क्योंकि सदा उसी में रहने की वजह से निकलना तो मिलेगा नहीं)(20)

नोटः- ऊपर आयात से मालूम हुआ कि इन्सान को सदा चैन आराम ही रहे कोई तकलीफ़ मुसीबत पेश न आए ऐसा तो हो नहीं सकता इसलिए ज़रूरी है कि हर आदमी दुनिया में मेहनत व मुशक़्क़त उस चीज़ के लिए करे जो उस को सदा काम आए और सदा के आराम का सामान बने और वो सिर्फ़ ईमान व ताबेदारी है।

91-सूरत-शम्स

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 15 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا ۝١ وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰىهَا ۝٢ وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰىهَا ۝٣ وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰىهَا ۝٤ وَالسَّمَآءِ وَمَا
بَنٰىهَا ۝٥ وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰىهَا ۝٦ وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا ۝٧ فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰىهَا ۝٨ قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ۝٩
وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ۝١٠ كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰىهَآ ۝١١ اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰىهَا ۝١٢ فَقَالَ لَهُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ
اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ۝١٣ فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا ۙ فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا ۝١٤ وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ۝١٥

आयत नं0 01 से 15

क़सम है सूरज की और उस की रौशनी की(01) और चान्द की जब (वो) **सूरज डूबने के बाद आए(02) और** (क़सम है) **दिन की जब वो उस** (सूरज) **को ख़ूब चमका दे(03) और** (क़सम है) **रात की जब वो उस** (सूरज) **को** (और उस की निशानियों को) **छुपाले** (यानी अच्छी तरह रात हो जाए)**(04) और** (क़सम है) **आसमान की और उस** (हस्ती) **की जिसने उस को बनाया** (यानी अल्लाह तआ़ला**(05) और** (क़सम है) **ज़मीन की और उस** (हस्ती) **की जिसने उस को बिछाया(06) और** (क़सम है इन्सान की) **जान की और उस** (हस्ती) **की जिस ने उस को** (हर तरह सूरत शकल बदन से) **ठीक बनाया(07) फिर उसके दिल में बुराई और अच्छाई** (दोनों बातों) **की समझ डाली(08) बेशक कामयाब हुआ जिसने इस** (जान) **को पाक कर लिया** (यानी जी को बुराइयों से रोका और परहेज़गारी अपनाई)**(09) और वो नाकाम हुआ जिसने इस को** (बुराइयों में) **दबा दिया(10)** (और ऐ मक्के के काफ़िरों जब तुम बुराइयों में पड़े हो तो ज़रूर अज़ाब में पकड़े जाओगे जैसा कि) **समूद की क़ौम ने अपनी बुराइयों की वजह से** (पैग़म्बर सालिह अलैहिस्सलाम को) **झुटलाया(11)** (और यह उस वक़्त का क़िस्सा है) **जब कि क़ौम में जो सब से ज़्यादा बदनसीब था वो** (उस ऊंटनी को मारने के लिए) **उठ खड़ा हुआ** (यानी तैयार हो गया और उसके साथ और लोग भी थे)**(12) तो अल्लाह के पैग़म्बर** (सालिह अलैहिस्सलाम को जब उनके इस क़त्ल

के इरादे की ख़बर हुई तो उन्हों) **ने उन लोगों से कहा कि अल्लाह की** (इस) **ऊंटनी से और इसके पानी पीने से ख़बरदार रहना** (यानी न उस को मारना और न उस का पानी बन्द करना)(13) **तो उन्होंने पैग़म्बर को** (यानी पैग़म्बरी की निशानी को) **झुटलाया फिर उस ऊंटनी को मार दिया तो उनके रब ने उनके गुनाह की वजह से उन पर अज़ाब भेजा फिर उस** (अज़ाब) **को** (सारी क़ौम के लिए) **आम कर दिया**(14) **और अल्लाह को उस अज़ाब के बाद में किसी ख़राबी** (के निकलने) **का** (किसी से कोई) **ख़तरा नहीं हुआ** (जैसे दुनिया के बादशाहों को कभी-कभी किसी क़ौम को सज़ा देने के बाद यह डर होता है कि उस पर कोई हंगामा न हो)(15)

नोटः- समूद क़ौम की मांग पर अल्लाह तआ़ला ने पैग़म्बरी की निशानी के लिए मोजिज़े से यह ऊंटनी पैदा की थी। और लोगों से कहा कि एक दिन कुंए से यह पानी पियेगी, और दूसरे दिन तुम पानी भर लिया करना। लेकिन उन्होंने पैग़म्बर को झुटलाया और उस क़ौम के एक पत्थर दिल आदमी ने जिकसका नाम ''क़िदार'' बताया जाता है क़ौम के मशवरे से उस ऊंटनी को क़त्ल कर दिया। उसके बाद उस क़ौम पर अज़ाब आया।

92-सूरत-लैल

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 21 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ۙ۱ وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ۙ۲ وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰۤى ۙ۳ اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ؕ۴ فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى
وَاتَّقٰى ۙ۵ وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۙ۶ فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ؕ۷ وَاَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ۙ۸ وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ۙ۹
فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ؕ۱۰ وَمَا يُغْنِىْ عَنْهُ مَالُهٗۤ اِذَا تَرَدّٰى ؕ۱۱ اِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ۖ۱۲ وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ۱۳
فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ۚ۱۴ لَا يَصْلٰىهَاۤ اِلَّا الْاَشْقَى ۙ۱۵ الَّذِىْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ؕ۱۶ وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ۙ۱۷ الَّذِىْ يُؤْتِىْ
مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ۚ۱۸ وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰۤى ۙ۱۹ اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ۚ۲۰ وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ۲۱

आयत नं0 01 से 21

क़सम है रात की जब कि वो (सूरज को और दिन को) **छुपाले(01) और** (क़सम है) **दिन की जब कि उस की रौशनी फैल जाए(02) और** (क़सम है) **उस** (हस्ती यानी अल्लाह तआ़ला) **की जिसने नर और मादा को पैदा किया(03)** (आगे क़सम का जवाब है कि) **बेशक तुम्हारी कोशिशें** (यानी किये काम) **अलग-अलग** (हैं और इसी तरह उन के फल भी अलग-अलग) **हैं(04) तो जिसने** (अल्लाह की राह में माल) **दिया और अल्लाह से डरा(05) और सब से अच्छी बात** (यानी दीन इस्लाम) **को सच्चा समझा(06) तो हम उस को आराम की चीज़** (यानी जन्नत) **के लिए सामान** (देंगे मतलब यह कि अच्छे काम उसके लिए आसान कर) **देंगे(07) और जिसने** (ज़रूरी हक़ों से) **कंजूसी की और** (बजाए अल्लाह से डरने के उससे) **बेपरवाई की(08) और अच्छी बात** (यानी दीने इस्लाम) **को झुटलाया(09) तो हम उस को तकलीफ़ की चीज़** (यानी दोज़ख़) **के लिए सामान** (देंगे मतलब यह कि बुरे कामों में उस के लिए आसानी कर) **देंगे(10) और** (आगे बुराई का अन्जाम बताया गया कि) **उसका माल उसके कुछ काम न आएगा जब वो बर्बाद होने** (लगेगा यानी दोज़ख़ में जाने) **लगेगा(11) असल में हमारे ज़िम्मे राह का बता देना** (है सो वो हमने पूरी तरह बता दी है

फिर किसी ने ईमान व ताबेदारी की राह अपनाई और किसी ने कुफ़्र व गुनाह की राह अपनाई) **है**(12) **और** (जैसी राह कोई आदमी चलेगा वैसा ही फल उस को देंगे क्योंकि) **हमारे ही क़ब्ज़े में है आख़रत और दुनिया** (यानी दोनों में हमारी ही हुकूमत है इसलिए दुनिया में हुक्म जारी किये और आख़रत में मानने व न मानने पर सवाब व अज़ाब देंगे)(13) **तो मैं तुमको एक भड़कती हुई आग से डरा चुका हूं** (तो उससे बचने के काम करो)(14) **उसमें** (सदा के लिए) **वो बदनसीब ही जाएगा**(15) **जिसने** (सच्चे दीन को) **झुटलाया** (और उससे) **मुंह फेरा**(16) **और उससे ऐसा आदमी दूर रक्खा जाएगा जो बुराइयों से बचने वाला है**(17) **जो अपना माल सिर्फ़ इसलिए देता है कि गुनाहों से पाक हो जाए** (यानी अल्लाह को राज़ी करना चाहे)(18) **हालांकि उसके ज़िम्मे किसी का अहसान न था कि** (इस देने से) **उसका बदला उतारना चाहता हो**(19) **सिवाए अपने उस रब को राज़ी करने के जिसकी शान सबसे ऊंची है** (यानी उस की कोई और नीयत नहीं)(20) **और ऐसा आदमी जल्दी ही ख़ुश हो जाएगा** (यानी आख़रत में ऐसी नेमतें मिलेंगी कि उसको सदा की ख़ुशी नसीब होगी)(21)।

नोटः- हज़रत अबूबक्र रज़ि० की यह आदत भी थी कि जिस मुसलमान को काफ़िरों की क़ैद में देखते उसको ख़रीद कर आज़ाद कर देते थे। और ये लोग आम तौर से कमज़ोर होते थे। उनके बाप अबूक़हाफ़ा रज़ि० ने कहा कि जब तुम ग़ुलामों को आज़ाद ही करते हो तो इतना काम करलो कि ऐसे ग़ुलामों को आज़ाद किया करो जो ताक़तवर और बहादुर हैं ताकि वो कल तुम्हारे दुशमनों का मुक़ाबिला और तुम्हारी हिफ़ाज़त कर सकें। हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा कि मेरा इरादा उन आज़ाद किये हुए लोगों से कोई फ़ाइदा उठाना नहीं बल्कि मैं तो सिर्फ़ अल्लाह तआला को राज़ी करने के लिए उनको आज़ाद कर रहा हूं। (मज़हरी)

93-सूरत-ज़ुहा

''इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 11 आयतें हैं''

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَ الضُّحٰی ۙ﴿۱﴾ وَ الَّیۡلِ اِذَا سَجٰی ۙ﴿۲﴾ مَا وَدَّعَکَ رَبُّکَ وَ مَا قَلٰی ؕ﴿۳﴾ وَ لَلۡاٰخِرَۃُ خَیۡرٌ لَّکَ مِنَ الۡاُوۡلٰی ؕ﴿۴﴾ وَ لَسَوۡفَ یُعۡطِیۡکَ
رَبُّکَ فَتَرۡضٰی ؕ﴿۵﴾ اَلَمۡ یَجِدۡکَ یَتِیۡمًا فَاٰوٰی ﴿۶﴾ وَ وَجَدَکَ ضَآلًّا فَہَدٰی ﴿۷﴾ وَ وَجَدَکَ عَآئِلًا فَاَغۡنٰی ؕ﴿۸﴾ فَاَمَّا الۡیَتِیۡمَ
فَلَا تَقۡہَرۡ ؕ﴿۹﴾ وَ اَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنۡہَرۡ ؕ﴿۱۰﴾ وَ اَمَّا بِنِعۡمَۃِ رَبِّکَ فَحَدِّثۡ ﴿۱۱﴾

आयत नं0 01 से 11

क़सम है दिन की रौशनी की(01) और रात की जबकि (उस का अन्धेरा) **छा जाए(02) कि** (ऐ पैग़म्बर) **आप के रब ने न आप को छोड़ा और न आप से नाराज़ हुआ** (न आप से ऐसी बात हुई और न हो सकती है कुछ दिनों वही न आने की वजह से लोगों के यह कहने की वजह से कि आप को आप के अल्लाह ने छोड़ दिया है आप दुखी न हों ऐसा नहीं)**(03) और** (आप को बराबर नेमतें व बरकतें मिलती रहेंगी और) **आख़रत आप के लिए दुनिया से बहुत अच्छी है** (बस वहां आप को इससे ज़्यादा नेमतें मिलेंगी)**(04) और जल्दी ही अल्लाह तआला आप को** (आख़रत में बहुत नेमतें) **देगा तो आप** (उनके मिलने से) **खुश हो जाएंगे(05) क्या** (दुनिया में भी अल्लाह तआला ने) **आप को यतीम नहीं पाया फिर** (आप को) **ठिकाना दिया** (यतीम पैदा हुए तो पहले दादा ने पाला फिर चाचा ने पाला)**(06) और** (अल्लाह तआला ने) **आप को** (शरीअ़त से) **बेख़बर पाया तो** (आप को शरीअ़त का) **रास्ता बताया** (और वही आने से पहले शरीअ़त के हुक्मों का पता न होना कोई ऐब की बात नहीं)**(07) और** (अल्लाह तआला ने) **आप को ग़रीब पाया तो मालदार बना** (दिया जैसा कि हज़रत ख़दीजा के वास्ते से माल) **दिया(08) तो आप** (इसके शुक्रये में) **यतीम पर सख़्ती न कीजिए(09) और मांगने वाले को मत झिड़कये** (अगर मौक़ा न हो तो नर्मी से इनकार कर दीजिए)**(10) और अपने रब की नेमतों का ज़िक्र** (और शुक्र) **करते रहा कीजिए(11)।**

नोटः- हदीस में है कि जब यह आयत उतरी ''वलॣ सौफ़ॣ यूतीका रब्बुका फ़तरज़ा'' यानी जल्दी ही अल्लाह तआला आप को इतनी नेमतें देगा कि आप ख़ुश होजाएंगे। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जब यह बात है तो मैं उस वक़्त तक राज़ी न हूंगा जब तक मेरी उम्मत में से एक आदमी भी जहन्नम में रहेगा। (क़ुरतबी)

मसअलाः- हर नेमत का शुक्र अदा करना वाजिब है माली नेमत का शुक्र यह है कि उस माल में से सच्ची नीयत से कुछ अल्लाह के लिए ख़र्च करे। और बदन की नेमत का शुक्र यह है कि जिस्मानी ताक़त को अल्लाह के वाजिबों को अदा करने में ख़र्च करे। और इल्म की नेमत का शुक्र यह है कि दूसरों को भी सिखाए।

94-सूरत-इन्शिराह

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 8 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اَلَمۡ نَشۡرَحۡ لَكَ صَدۡرَكَ ۙ﴿۱﴾ وَ وَضَعۡنَا عَنۡكَ وِزۡرَكَ ۙ﴿۲﴾ الَّذِیۡۤ اَنۡقَضَ ظَهۡرَكَ ۙ﴿۳﴾ وَ رَفَعۡنَا لَكَ ذِكۡرَكَ ؕ﴿۴﴾ فَاِنَّ مَعَ
الۡعُسۡرِ یُسۡرًا ۙ﴿۵﴾ اِنَّ مَعَ الۡعُسۡرِ یُسۡرًا ؕ﴿۶﴾ فَاِذَا فَرَغۡتَ فَانۡصَبۡ ۙ﴿۷﴾ وَ اِلٰی رَبِّكَ فَارۡغَبۡ ﴿۸﴾

आयत नं0 01 से 08

(ऐ पैग़म्बर) **क्या हमने आप की ख़ातिर आप का सीना** (इल्म व सहार से) **नहीं खोल** (दिया यानी तबलीग़ में मुख़ालिफ़ों की तकलीफ़ को सहार करने की हिम्मत दी और बड़ा इल्म) **दिया(01) और हमने आप पर से आप का वो बोझ उतार दिया(02) जिसने आप की कमर तोड़ रक्खी थी** (यानी पैग़म्बरी की ज़िम्मेदारी को शुरू में आप ज़्यादा भारी समझ रहे थे फिर अल्लाह तआ़ला ने आप को हिम्मत दी)(03) **और हमने आप की ख़ातिर आप का नाम ऊंचा किया** (यानी अक्सर जगह शरीअ़त में अल्लाह के नाम के साथ आप का नाम लिया जाता है जैसे कलमे में अज़ान व तकबीर में, ख़ुत्बे में और नमाज़ में)(04) **बेशक इन मुश्किलों के साथ आसानी** (होने वाली) **है** (05) (हमारे इस वादे को फिर सुनिये) **बेशक इन मुश्किलों के साथ आसानी** (होने वाली) **है** (जैसा सभी मुश्किलें एक-एक करके सब दूर हो गईं)(06) **तो** (जब हम ने आप को ऐसी नेमतें दी हैं तो उसके शुक्रये में) **आप जब** (तबलीग़ का) **काम पूरा कर लिया करें तो** (दूसरी इबादतों में) **मेहनत किया** (कीजिए यानी ज़्यादा इबादत किया) **कीजिए(07) और अपने रब की ही तरफ़ ध्यान रखिए** (यानी जो कुछ मांगना हो उसी से मांगिए)(08)।

नोटः- यहां मालूम हुआ कि जो आलिम तालीम व तबलीग़ और लोगों के सुधार का काम करने वाले हैं उन का कुछ वक़्त तन्हाई में अल्लाह के ज़िक्र व इबादत के लिए होना चाहिए जैसा कि बड़ों का ये ही तरीक़ा रहा है। इसमें बेपरवाई न होना चाहिए। इसके बिना तालीम व तबलीग़ के काम में भी पूरा असर नहीं होता उसमें नूर व बरकत नहीं होती।

ऊपर आयत में मुश्किल के बाद जो आसानी देने का वादा किया गया है वो ख़ास रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के सहाबा के लिए ख़ास है। जिसको अल्लाह तआ़ला ने पूरा फ़रमाया कि दुनिया ने आंखों से देख लिया। अलबत्ता आम दस्तूरे इलाही अब भी ये ही है कि जो आदमी सख़्ती पर सब्र करे। और सच्चे दिल से अल्लाह पर भरोसा रक्खे। और हर तरफ़ से टूट कर उसी से लौ लगाए। और उसी की महरबानी का उम्मीदवार रहे। और कामयाबी में देरी होने से उम्मीद न तोड़ बैठे तो ज़रूर अल्लाह तआ़ला उसके हक़ में आसानी कर देगा।

(फ़वाइद उस्मानिया)

95-सूरत-तीन

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 8 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَالتِّیۡنِ وَالزَّیۡتُوۡنِ ۙ﴿۱﴾ وَطُوۡرِ سِیۡنِیۡنَ ۙ﴿۲﴾ وَھٰذَا الۡبَلَدِ الۡاَمِیۡنِ ۙ﴿۳﴾ لَقَدۡ خَلَقۡنَا الۡاِنۡسَانَ فِیۡۤ اَحۡسَنِ تَقۡوِیۡمٍ ﴿۴﴾
ثُمَّ رَدَدۡنٰہُ اَسۡفَلَ سٰفِلِیۡنَ ۙ﴿۵﴾ اِلَّا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَھُمۡ اَجۡرٌ غَیۡرُ مَمۡنُوۡنٍ ؕ﴿۶﴾ فَمَا یُکَذِّبُکَ
بَعۡدُ بِالدِّیۡنِ ؕ﴿۷﴾ اَلَیۡسَ اللّٰہُ بِاَحۡکَمِ الۡحٰکِمِیۡنَ ٪﴿۸﴾

आयत नं० 01 से 08

क़सम है अन्जीर (के पेड़) **की और ज़ैतून** (के पेड़) **की(01) और सीना** (के जंगल) **के पहाड़ तूर की(02) और इस अमन वाले शहर** (यानी मक्का मुअ़ज़्ज़मा) **की(03) कि हमने इन्सान को बहुत ख़ूबसूरत सांचे में ढाल कर पैदा किया है(04) फिर** (उनमें जो बूढ़ा हो जाता है) **हम उस को निचली हालत वालों में सबसे ज़्यादा निचली हालत में कर देते हैं** (यानी वो ख़ूबसूरती बदसूरती से और ताक़त कमज़ोरी से बदल जाती है इससे साबित हुआ कि अल्लाह तआ़ला दोबारा पैदा करने और ज़िन्दा करने की क़ुदरत रखता है)**(05) लेकिन जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किये तो उनके लिए इतना सवाब है जो कभी कम न होगा** (इसमें बता दिया गया कि मोमिन बूढ़े और कमज़ोर हो जाने के बाद भी अन्जाम के ऐतबार से अच्छे ही रहते हैं बल्कि पहले से उन की इज़्ज़त ज़्यादा बढ़ जाती है)**(06) तो** (ऐ इन्सान फिर) **किस लिए तू क़ियामत का इनकार कर रहा** (है यानी वो कौन सी दलील है जिसकी वजह से क़ियामत का इनकार कर रहा) **है(07) क्या अल्लाह तआ़ला सब हाकिमों से बढ़ कर हाकिम नहीं** (है बस वो सब कुछ कर सकता) **है(08)**

नोटः- हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब कोई मुसलमान किसी बीमारी में गरिफ़तार हो जाता है तो अल्लाह तआ़ला उसके कामों के लिखने वाले फ़रिशतों को हुक्म देते हैं कि जो-जो नेक काम यह अपनी तन्दरूस्ती के दिनों में किया

करता था वो सब उसके आमाल नामे में लिखते रहो। (बुख़ारी)

मसअलाः- एक हदीस से साबित होता है कि इस सूरत की आख़िरी आयत पढ़ने के बाद यह पढ़ना मुस्तहब है।

''बला व अना अला ज़ालिका मिनश्शाहिदीन''।

यानी क्यों नहीं मैं इस बात की गवाही देता हूं कि अल्लाह तआ़ला सब हाकिमों से बढ़ कर हाकिम है।

96-सूरत-अलक़

''इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 19 आयतें हैं''

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ۝١ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ۝٢ اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ۝٣ الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۝٤ عَلَّمَ
الْاِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ۝٥ كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰٓى ۝٦ اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ۝٧ اِنَّ اِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ۝٨ اَرَءَيْتَ
الَّذِيْ يَنْهٰى ۝٩ عَبْدًا اِذَا صَلّٰى ۝١٠ اَرَءَيْتَ اِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰٓى ۝١١ اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰى ۝١٢ اَرَءَيْتَ اِنْ كَذَّبَ وَ
تَوَلّٰى ۝١٣ اَلَمْ يَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ يَرٰى ۝١٤ كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ لَنَسْفَعًا بِالنَّاصِيَةِ ۝١٥ نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۝١٦
فَلْيَدْعُ نَادِيَهٗ ۝١٧ سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ ۝١٨ كَلَّا لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۝١٩

आयत नं0 01 से 19

नोटः- ''इक़रा'' से ''मालम यालम'' तक सबसे पहली वही है जिसके उतरने से पैग़म्बरी शुरू हुई। जिसका क़िस्सा हदीस में यह है कि पैग़म्बरी मिलने के नज़दीक दिनों में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़ारे हिरा में कई-कई दिन इबादत करते थे। एक दिन अचानक जिब्रील अलैहिस्सलाम आए और आप से कहा ''इक़रा'' यानी पढ़िए। आप ने कहा मैं कुछ पढ़ा हुआ नहीं। उन्होंने बहुत ज़ोर से आप को दबाया फिर कहा पढ़िए। आप ने फिर वो ही जवाब दिया। इसी तरह तीन बार किया फिर आख़िर में दबाने के बाद छोड़ कर कहा- ''इक़रा'' से ''मालम यालम'' तक। इस तरह ये आयतें उतरीं फिर बाक़ी आयतें बाद में उतरीं।

ऐ पैग़म्बर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **आप** (पर जो) **कुरआन** (उतरा करेगा जिन में ये आयतें भी दाख़िल हैं) **अपने** (उस) **रब का नाम लेकर पढ़ा** (कीजिए यानी बिस्मिल्लाह पढ़ा) **कीजिए जिसने** (सब को) **पैदा किया(01)** (और) **जिसने** (ख़ास कर) **इन्सान को जमे हुए ख़ून से पैदा किया** (यानी इन्सान को सारे जानदारों में सब से बेहतर बनाया इसलिए उस को ज़्यादा शुक्र और ज़िक्र करना चाहिए)**(02) आप कुरआन पढ़ा कीजिए आप का रब बड़ा महरबान** (है भले ही आप लिखे

पढ़े न हों वो जो चाहता है दे देता) **है(03)** (और वो ऐसा है) **जिसने** (लिखे पढ़ों को) **क़लम से इल्म सिखाया(04)** (और) **इन्सान को** (दूसरे तरीक़ों से) **वो चीज़ें सिखाईं जिन को वो नहीं जानता था** (बस आप को इल्म देना हमारा काम है और आप की हिफ़ाज़त करना भी)**(05) बेशक** (काफ़िर) **इन्सान** (आदमियत की) **हद से निकल जाता है(06) इस लिए कि** (माल व दौलत की वजह से) **अपने आप को** (सब से) **बेपरवाह समझता है(07)** (जब कि लोगों की चाहे ज़रूरत न हो अल्लाह तआ़ला का तो हर हाल में मुहताज है यहां तक कि आख़ीर में) **तेरे रब ही की तरफ़ सब को लौटना होगा** (और उसकी सज़ा से कभी भाग भी न सकेगा)**(08) भला तुम ने उस आदमी** (की सरकशी) **को भी देखा जो** (नमाज़ से) **मना करता है(09)** (हमारे) **एक** (ख़ास) **बन्दे को जब वो** (बन्दा) **नमाज़ पढ़ता** (है यानी नमाज़ी को नमाज़ से रोकना बहुत ही बुरी बात) **है(10) भला अगर वो** (बन्दा जिस को नमाज़ से रोका गया है) **सही रास्ते पर हो(11) या वो दूसरों को भी नेकी की बात सिखाता हो** (तो ऐसी सूरत में उसे रोकना तो और भी गुमराही है)**(12) भला यह तो बताओ कि अगर वो आदमी** (मना करने वाला सच्चे दीन को) **झुटलाता हो और** (सच्चे दीन से) **मुंह फेरता** (हो यानी उसका अ़क़ीदा भी ख़राब हो और अमल भी ख़राब) **हो(13)** (आगे इस मना करने पर उसको धमकी है यानी) **क्या उस आदमी को यह पता नहीं कि अल्लाह तआ़ला** (उसके सब कामों को) **देख रहे हैं** (और उस पर सज़ा देंगे)**(14) हरगिज़** (उस को ऐसा) **नहीं** (करना चाहिए और) **अगर यह आदमी** (अपनी इस हरकत से) **बाज़ नहीं आएगा तो हम** (उसको) **पंठे** (माथे के बाल) **पकड़ कर** (दोज़ख़ की तरफ़) **घसीटेंगे(15) जो कि झूटे गुनाहगार के पंठे हैं(16)** (और इस को जो अपने साथियों पर घमन्ड़ है और हमारे पैग़म्बर को धमकाता है) **तो यह अपने साथियों को बुलाले(17)** (अगर उसने ऐसा किया तो) **फिर हम भी दोजख़ के सिपाहियों को** (यानी फ़रिशतों को) **बुला लेंगे** (मगर उसने नहीं बुलाया इसलिए अल्लाह ने फ़रिशतों को नहीं बुलाया)**(18) हरगिज़** (उसको ऐसा) **नहीं** (करना चाहिए, मगर) **आप** (उस नालाइक़ की उन हरकतों की परवाह न कीजिए और) **उसका कहना न मानिए** (जैसा अब तक भी नहीं माना) **और उसी तरह नमाज़ पढ़ते रहिए और अल्लाह की नज़दीकी पाते जाइए** (और एक हदीस में है कि बन्दा अपने रब से सबसे ज़्यादा नज़दीक उस वक़्त होता है जब कि वो सजदे में होता है)**(19)।**

नोटः- अबूजहल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सख़्त दुशमन था वो आप को नमाज़ पढ़ने से रोकता था और डराता था उसके बारे में ये आयतें उतरीं और बता दिया गया कि वो कुछ

नुक़सान नहीं पहुंचा सकता। जैसा कि एक बार उसने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर हमला करना चाहा तो उस को बीच में आग की खाई दिखाई दी।

मसअलाः- इस सूरत की आख़री आयत की तिलावत करने और सुनने वाले पर सजदाए तिलावत वाजिब हो जाता है।

97-सूरत-क़्द्र

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 5 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

إِنَّآ أَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ﴿١﴾ وَمَآ أَدْرٰىكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ﴿٢﴾ لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ﴿٣﴾ تَنَزَّلُ
الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ مِّنْ كُلِّ أَمْرٍ ﴿٤﴾ سَلٰمٌ هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ﴿٥﴾

आयत नं0 01 से 05

बेशक हमने इस (क़ुरआन) **को शबे क़द्र में उतारा है(01) और** (ज़्यादा शौक़ दिलाने के लिए कहते हैं कि) **आप को क्या पता कि शबे क़द्र कैसी चीज़ है(02)** (आगे जवाब है कि) **शबे क़द्र एक हज़ार महीनों से भी बेहतर** (है यानी एक हज़ार महीनों तक इबादत करने का जितना सवाब है उससे ज़्यादा शबे क़द्र में इबादत करने का सवाब) **है(03)** (और वो रात ऐसी है कि) **उस रात में फ़रिशते और रूहुलक़ुदुस** (यानी जिब्रील अलैहिस्सलाम) **अपने रब के हुक्म से हर भलाई की बात लेकर** (ज़मीन की तरफ़) **उतरते हैं(04)** (और वो रात) **सलामती वाली है** (कि इस रात में जिब्रील अलैहिस्सलाम फ़रिशतों की जमाअत के साथ उतरते हैं और इबादत करने वालों पर सलाम भेजते हैं और उनके लिए रहमत की दुआ करते हैं और) **शबे क़द्र** (इसी बरकत व रहमत के साथ) **सुबह के निकलने तक रहती** (है यानी यह नहीं कि इस रात के किसी ख़ास हिस्से में यह बरकत हो और किसी हिस्से में बरकत न हो बल्कि पूरी रात में सलामतमी रहती) **है(05)।**

नोटः- पहली उम्मतों में उम्रें ज़्यादा होती थीं सहाबा को फ़िक्र हुई कि वो लोग ज़्यादा इबादत कर सकते थे और उनकी इबादतों के क़िस्से भी सुने थे तो हम उन की बराबर इबादत नहीं कर सकते इस पर शबे क़द्र की ख़ुशख़बरी दी गई कि कम उम्र में भी ज़्यादा सवाब कमा सकते हैं।

हदीस से साबित है कि जिस आदमी ने इशा व फ़ज्र की नमाज़ जमाअत से पढ़ ली उसने भी इस रात का सवाब पा लिया।

हज़रत आ़इशा रज़ि० ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से पूछा कि अगर मैं शबे क़द्र को पाऊं तो क्या दुआ करूं आपने फ़रमाया कि यह दुआ करो। "अल्लाहुम्मा इन्नका्" अफ़्व्वुन तुहिब्बुल अफ़्वा् फ़ाफु अन्नी"।

यानी या अल्लाह आप बहुत मुआफ़ करने वाले हैं और मुआ़फ़ी को पसन्द करते हैं मेरी ख़ताएं मुआ़फ़ कर दीजिए। (क़ुरतबी)

शबे क़द्र में पूरा क़ुरआन लोहे महफ़ूज़ से एक बार में उतारा गया और फिर थोड़ा-थोड़ा हज़रत जिब्रील अलैहिस्सलाम अल्लाह के हुक्म से २३ साल तक लाते रहे।

98-सूरत-बय्यिना

''इस मदनी सूरत में 1 रूकू और 8 आयतें हैं''

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَ الْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝1 رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا
صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۝2 فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ۝3 وَ مَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ۝4 وَ
مَاۤ اُمِرُوْۤا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ وَ يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ يُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَ ذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ۝5
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَ الْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ اُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ۝6 اِنَّ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ۝7 جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَ رَضُوْا عَنْهُ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ۝8

आयत नं0 01 से 08

जो लोग किताब वालों और मुशरिकों में (नबी के आने से पहले) **काफ़िर थे वो** (अपने कुफ़्र से उस वक़्त तक) **बाज़ आने वाले न थे जब तक उन के पास साफ़ दलील न आती(01)** (यानी) **एक अल्लाह का पैग़म्बर जो** (उनको) **पाक किताब पढ़ कर सुनाए(02) जिन में सीधी सच्ची बातें लिखी हों** (यानी कुरआन मतलब यह कि बिना पैग़म्बर और कुरआन के आए वो राह पर आने वाले न थे इसलिए अल्लाह तआला ने कुरआन देकर आप को भेजा)**(03) और** (उन को चाहिए था कि इस पर ईमान ले आते मगर) **जो लोग किताब वाले थे वो इस खुली दलील के आने ही के बाद** (दीन में) **अलग** (राह पर) **हो गये** (और मुशरिकों के पास तो पहले ही से आसमानी इल्म न था)**(04) जब कि उन लोगों को** (पहली किताबों में) **ये ही हुक्म हुआ था कि अल्लाह की इस तरह इबादत करें कि इबादत को उसी के लिए ख़ालिस रक्खें और उसी की तरफ़ ध्यान करें** (किसी को अल्लाह का साझी न बनाएं) **और नमाज़ की पाबन्दी रक्खें और ज़कात दिया करें और ये ही तरीक़ा है उन किताबों का बताया हुआ** (यानी उन किताब वालों को उन की किताबों

में ये ही हुक्म हुआ था कि कुरआन और रसूल पर ईमान लाएं, इस तरह जो कुरआन व रसूल को नहीं मानता वो अपनी किताब को भी नहीं मानता और मुशरिक लोग हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को मानते थे और हज़रत इब्राहीम शिर्क से पाक थे)**(05) बेशक जो लोग किताब वालों और मुशरिकों में से काफ़िर हुए वो दोज़ख़ की आग में जाएंगे जहां सदा-सदा रहेंगे,** (और) **ये लोग सबसे बुरे हैं(06)** (और) **बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये वो सब अच्छे लोग हैं(07) उन का बदला उनके रब के यहां सदा-सदा रहने की जन्नतें हैं जिन के नीचे नहरें बहती होंगी जहां सदा-सदा रहेंगे, और अल्लाह तआ़ाला उनसे ख़ुश रहेगा और वो अल्लाह तआ़ाला से ख़ुश रहेंगे** (यानी न उनसे कोई गुनाह होगा जिस से अल्लाह तआ़ाला नाराज़ हो और न उनको कोई नागवार बात पेश आएगी जिससे वो नाख़ुश हों, और) **यह** (जन्नत और रज़ामन्दी) **उस आदमी के लिए है जो अपने रब से डरता** (है यानी ईमान लाकर नेक काम करता) **है(08)।**

नोटः- एक हदीस में है कि अल्लाह तआ़ाला जन्नती लोगों से पूछेंगे कि तुम लोग राज़ी और ख़ुश हो। वो जवाब देंगे या रब हमारे अब भी राज़ी न होने की क्या बात है जब कि आपने हम को वो सब कुछ दे दिया जो किसी मख़्लूक़ को नहीं मिला। अल्लाह तआ़ाला फ़रमाएंगे कि क्या मैं तुम को इससे भी बेहतर नेमत देदूं। फिर फ़रमाएंगे कि मैंने अपनी रज़ामन्दी तुम्हारे लिए उतार दी अब कभी तुम से नाराज़ न हूंगा। (मज़हरी)

99-सूरत-ज़िलज़ाल

"इस मदनी सूरत में 1 रूकू और 8 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ﴿١﴾ وَ اَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ﴿٢﴾ وَ قَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ﴿٣﴾ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ
اَخْبَارَهَا ﴿٤﴾ بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ﴿٥﴾ يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ﴿٦﴾ فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ
خَيْرًا يَّرَهٗ ﴿٧﴾ وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ﴿٨﴾

आयत नं0 01 से 08

जब ज़मीन अपने भौंचाल से हिलाई जाएगी(01) और ज़मीन अपने बोझ बाहर निकाल फेंकेगी (यानी जो चीज़ें उसमें गड़ी हैं चाहे मुर्दे हों या माल हो सब बाहर फेंक देगी और माल बाहर फेंकने की वजह यह हो सकती है कि माल की मुहब्बत करने वाले अपनी आँखों से माल का बेकार होना देखलें)**(02) और** (इस हालत को देख कर काफ़िर) **इन्सान कहेगा कि इसको क्या हुआ** (कि ज़मीन इस तरह हिल रही है और सब गड़ी चीज़ें बाहर आ रही हैं)**(03) उस दिन ज़मीन अपनी सब** (अच्छी बुरी) **बातें बयान करने लगेगी(04) इस वजह से कि आप के रब का उस को ये ही हुक्म होगा** (यानी जो काम ज़मीन पर किया होगा अच्छा या बुरा उसकी गवाही देगी)**(05) उस दिन लोग** (हिसाब की जगजह से) **अलग-अलग गिरोह होकर वापस होंगे** (यानी कुछ जन्नती कुछ दोज़ख़ी और जन्नती जन्नत की तरफ़ और दोज़ख़ी दोज़ख़ की तरफ़ चले जाएंगे) **ताकि अपने किये कामों** (के फल) **को देखलें(06) तो जो आदमी** (दुनिया में) **ज़रा सी भी नेकी करेगा वो उस को देख लेगा(07) और जो आदमी ज़रा सी भी बुराई करेगा वो उस को देख लेगा** (शर्त यह है कि वो नेकी और बुराई उस वक़्त तक बची हो क्योंकि कुफ़्र से नेकी बर्बाद हो जाती है और तौबा से गुनाह ऐसे मुआफ़ हो जाते हैं जैसे कि वो गुनाह किया ही न हो)**(08)**।

नोटः- हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि देखो ऐसे गुनाहों से बचने का पूरा ध्यान रक्खो जिन को छोटा या कमतर समझा जाता है क्योंकि अल्लाह की तरफ़ से उस पर भी पकड़ होनी है। (रिवायत किया इसको हज़रत आइशा रज़ि० ने)। (इब्ने माजा)

एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस सूरत को आधा क़ुरआन और ''क़ुल हुवल्लाहु अहद'' को तिहाई क़ुरआन और सूरत काफ़िरून को चौथाई क़ुरआन बताया है। (मज़हरी)

100-सूरत-आदियात

“इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 11 आयतें हैं”

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَ الْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۙ۝١ فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۙ۝٢ فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۙ۝٣ فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۙ۝٤ فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۙ۝٥ اِنَّ
الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۚ۝٦ وَ اِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۚ۝٧ وَ اِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ۗ۝٨ اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا
فِي الْقُبُوْرِ ۙ۝٩ وَ حُصِّلَ مَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ۝١٠ اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيْرٌ ۝١١

आयत नं0 01 से 11

क़सम है उन घोड़ों की जो हांपते हुए दौड़ते हैं(01) **फिर** (पत्थर पर) **टाप मार कर चिंगारियां उड़ाते हैं**(02) **फिर सुबह के वक़्त हमला कर देते हैं**(03) **फिर उस वक़्त धूल उड़ाते हैं**(04) **फिर उस वक़्त** (दुशमनों की) **फ़ौज में जा घुसते** (हैं मुराद इस से लड़ाई के घोड़े) **हैं**(05) (आगे क़सम का जवाब है कि) **बेशक** (काफ़िर) **इन्सान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है**(06) **और उस को ख़ुद भी इस बात का पता** (है कभी शुरू से ही और कभी सोचने के बाद अपनी नाशुक्री को जान लेता) **है**(07) **और उस को माल की मुहब्बत ज़्यादा** (है और ये ही उस की नाशुक्री की वजह) **है**(08) (आगे माल की मुहब्बत और नाशुक्री पर धमकी है कि) **क्या वो उस वक़्त को नहीं जानता जब ज़िन्दा किये जाएंगे जितने मुर्दे क़ब्रों में हैं** (यानी क़ियामत में)(09) **और खुल जाएगा जो कुछ** (राज़) **दिलों में है**(10) **बेशक उनके रब को उनके हाल की उस दिन सब ख़बर है** (और जैसे जिसके काम होंगे वैसा बदला देगा, मतलब यह है कि इन्सान को अगर उस वक़्त की पूरी ख़बर होती और आख़रत का हाल ध्यान में होता तो अपनी नाशुक्री और माल की मुहब्बत से बाज़ आ जाता)(11)।

नोटः- हज़रत हसन बसरी रह० ने फ़रमाया कि जो इन्सान नेमतों और अहसानों को भूल जाता है और मुसीबतों व तकलीफ़ों को याद रखता है वो नाशुक्रा है।

101-सूरत-क़ारिआ

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 11 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اَلْقَارِعَةُ ۙ﴿۱﴾ مَا الْقَارِعَةُ ۚ﴿۲﴾ وَ مَآ اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ؕ﴿۳﴾ يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۙ﴿۴﴾ وَ تَكُوْنُ
الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ؕ﴿۵﴾ فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۙ﴿۶﴾ فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ؕ﴿۷﴾ وَ اَمَّا مَنْ خَفَّتْ
مَوَازِيْنُهٗ ۙ﴿۸﴾ فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ؕ﴿۹﴾ وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا هِيَهْ ؕ﴿۱۰﴾ نَارٌ حَامِيَةٌ ۧ﴿۱۱﴾

आयत नं0 01 से 11

वो दिल दहला देने वाली चीज़(01) कैसी है वो दिल दहला देने वाली चीज़(02) और आप को कुछ पता है कैसी है वो दिल दहला देने वाली चीज़ (यानी क़ियामत)(03) **जिस दिन लोग बिखरे हुए परवानों की तरह हो जाएंगे** (यानी जब क़ियामत आएगी तो इन्सान बहुत ज़्यादा होंगे और कमज़ोर व परेशान इधर उधर भागेंगे मगर मुसलमान ऐसे बेचैन न होंगे)(04) **और पहाड़ धुनकी हुई रंगीन ऊन की तरह हो जाएंगे(05)** (उस दिन इन्सानों के किये कामों को तौला जाएगा) **फिर जिस आदमी का पल्ला** (ईमान का) **भारी** (होगा यानी जो मोमिन) **होगा(06) वो तो मन चाहे आराम में होगा** (यानी बख़्शिश पाकर जन्नत में जाएगा)(07) **और जिस आदमी का पल्ला** (ईमान का) **हलका** (होगा यानी जो काफ़िर) **होगा(08) तो उस का ठिकाना हाविया होगा(09) और आप को कुछ पता है वो** (हाविया) **क्या चीज़ है(10)** (वो) **एक दहकती हुई आग है** (यानी वो दोज़ख़ में जाएगा)(11)।

नोटः- लिखा है कि महशर में वज़न दो बार होगा। एक बार मोमिन व काफ़िर का फ़ैसला करने के लिए दूसरा वज़न मोमिनो के आमाल के लिए। यहां पहला वज़न मुराद है जिसमें हर मोमिन का पल्ला ईमान की वजह से भारी होगा चाहे उसके आमाल कैसे ही हों और काफ़िर का पल्ला ईमान न होने की वजह से हल्का होगा चाहे उसने कुछ नेक काम भी किये हों।

102-सूरत-तकासुर

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 8 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۝١ حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝٢ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٣ ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٤ كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ
عِلْمَ الْيَقِيْنِ ۝٥ لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۝٦ ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۝٧ ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَىِٕذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ۝٨

आयत नं0 01 से 08

(दुनिया कमाने की) **हवस** (और माल पर घमन्ड) **ने तुम्हें** (आख़रत से) **भूल में डाल रक्खा है** (यानी दुनिया समेटने की धुन में आख़रत को भूले हुए हो और माल कमाने में जाइज़ नाजाइज़ कुछ नहीं देखते)(01) **यहां तक कि तुम क़ब्रुस्तानों में पहुंच जाते** (हो यानी मर जाते) **हो**(02) **हरगिज़** (ऐसा) **नहीं** (चाहिए यानी दुनिया के सामान पर घमन्ड न करना चाहिए और न आख़रत को भूलना चाहिए) **जल्दी तुम्हें सब पता चल जाएगा**(03) **फिर** (सुनलो) **हरगिज़** (ऐसा) **नहीं** (चाहिए बल्कि) **जल्दी तुम्हें सब पता चल जाएगा**(04) **हरगिज़** (ऐसा) **नहीं** (करते) **अगर तुम यक़ीन से यह बात जानते होते** (यानी सोच समझ से काम लेते तो एसा न करते)(05) **तुम लोग दोज़ख़ को ज़रूर देखोगे**(06) **फिर** (सुनलो) **सच जानो कि तुम उसे बिल्कुल यक़ीन के साथ** (देखोगे यानी खुली आंखों) **देखोगे**(07) **फिर** (और बात सुनो कि) **उस दिन तुम से सब नेमतों की पूछ होगी** (कि अल्लाह की दी हुई नेमतों का हक़ ईमान व ताबेदारी के साथ अदा किया या नहीं)(08)।

नोटः- जो लोग जन्नत में जाएंगे उन्हें भी दोज़ख़ दिखाई जाएगी ताकि उन्हें जन्नत की सही क़द्र मालूम हो।

हदीसः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि महशर में कोई आदमी अपनी जगह से सरक न सकेगा जब तक पांच सवालों का जवाब उससे न लिया जाए। एक यह कि उसने अपनी उम्र को किन कामों में फ़ना किया है। दूसरे यह कि उसने अपनी जवानी की ताक़त को किन कामों में ख़र्च किया है। तीसरे यह कि जो माल उसने कमाया वो किस-किस तरीक़े से कमाया

जाइज़ या नाजाइज़ से। चौथे यह कि उस माल को कहां ख़र्च किया। पांचवे यह कि जो इल्म अल्लाह ने उस को दिया था उस पर कितना अमल किया। (बुख़ारी)

एक हदीस में है कि सूरत ''तकासुर'' पढ़ना एक हज़ार आयतों के बराबर है। (मज़हरी)

103-सूरत-अस्र

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 3 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَالْعَصْرِ ۙ﴿۱﴾ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِیْ خُسْرٍ ۙ﴿۲﴾ اِلَّا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ۬ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ﴿۳﴾

आयत नं० 01 से 03

क़सम है ज़माने की(01) (कि) **इन्सान असल में** (अपनी उम्र बर्बाद करने की वजह से) **बड़े नुक़सान में है**(02) **सिवाए उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किये और एक दूसरे को सच्चे दीन पर** (जमे) **रहने की नसीहत करते रहे और एक दूसरे को** (नेक कामों की) **पाबन्दी की नसीहत करते** (रहे यानी जो खुद भी पाबन्द रहे और दूसरों को भी समझाते रहे ये लोग नुक़सान में नहीं बल्कि नफ़े में) **रहे** (और इस से यह भी मालूम हुआ कि सिर्फ़ ख़ुद नेक बन जाना ही बख़्शिश के लिए काफ़ी नहीं बल्कि दूसरे पास वालों को समझाना भी ज़रूरी है)(03)

नोटः- इस सूरत ने मुसलमानों को एक बड़ी हिदायत यह भी दी कि उन का सिर्फ़ अपने अमल को कुरआन व सुन्नत के ताबे कर लेना जितना ज़रूरी है उतना ही ज़रूरी यह है कि दूसरे मुसलमानों को भी ईमान और नेक कामों की तरफ़ बुलाने की हिम्मत भर कोशिश करें। वर्ना सिर्फ़ अपना अमल बख़्शिश के लिए काफ़ी न होगा। ख़ास कर अपने घर वालों और दोस्तों व ताल्लुक़ वालों के बुरे कामों से बेपरवाई बरतना अपनी बख़्शिश का रास्ता बन्द करना है भले ही वो ख़ुद कैसे ही नेक कामों का पाबन्द हो। इसलिए कुरआन व हदीस में हर मुसलमान पर अपनी-अपनी हिम्मत के हिसाब से भलाई की नसीहत करना और बुराई से रोकना फ़र्ज़ किया गया है। इस बारे में आम मुसलमान बल्कि बहुत से ख़ास लोग तक भूल में हैं। ख़ुद अमल करने को काफ़ी समझ बैठे हैं औलाद व घर वाले कुछ भी करते रहें उस की फ़िक्र नहीं करते। अल्लाह तआला हम सब को इस आयत की हिदायत की तौफ़ीक़ नसीब करें।

104-सूरत-हुमाज़ा

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 9 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

وَيۡلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۙ﴿۱﴾ اۨلَّذِىۡ جَمَعَ مَالًا وَّ عَدَّدَهٗ ۙ﴿۲﴾ يَحۡسَبُ اَنَّ مَالَهٗۤ اَخۡلَدَهٗ ۚ﴿۳﴾ كَلَّا لَيُنۡۢبَذَنَّ فِى
الۡحُطَمَةِ ۖ﴿۴﴾ وَ مَاۤ اَدۡرٰٮكَ مَا الۡحُطَمَةُ ؕ﴿۵﴾ نَارُ اللّٰهِ الۡمُوۡقَدَةُ ۙ﴿۶﴾ الَّتِىۡ تَطَّلِعُ عَلَى الۡاَفۡـِٕدَةِ ؕ﴿۷﴾ اِنَّهَا عَلَيۡهِمۡ
مُّؤۡصَدَةٌ ۙ﴿۸﴾ فِىۡ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ﴿۹﴾

आयत नं0 01 से 09

बड़ी ख़राबी है हर ऐसे आदमी के लिए जो पीठ पीछे (दूसरों की) **बुराई करने वाला हो** (और) **मुंह पर ताना देने वाला हो(01) जो** (बहुत लालच की वजह से) **माल जमा करता हो और** (उस की मुहब्बत और उस पर घमन्ड की वजह से) **उस को बार-बार गिनता रहता हो(02)** (यानी) **वो समझ रहा है कि उस का माल उसके पास सदा** (रहेगा यानी वो समझता है कि वो ख़ुद भी सदा रहेगा और उस का माल भी) **रहेगा(03)** (हालांकि यह माल उसके पास) **हरगिज़ नहीं** (रहेगा बल्कि) **क़सम से वो आदमी ऐसी आग में डाला जाएगा जिस में जो कुछ पड़े वो उस को चूरा-चूरा कर डाले(04) और आप को कुछ पता है कि वो चूरा-चूरा करने वाली आग कैसी है (05) वो अल्लाह की आग है जो** (अल्लाह के हुक्म से) **सुलगाई गई** (है यानी बहुत सख़्त) **है(06)** (और वो ऐसी है) **जो** (बदन को लगते ही) **दिलों तक जा पहुंचेगी(07)** (और) **वो आग उन पर बन्द कर दी जाएगी(08)** (इस तरह से कि वो लोग आग के) **बड़े लम्बे चौड़े खम्बों में** (घिरे हुए) **होंगे** (दोज़ख़ में आग के शोले लम्बे चौड़े खम्बों की शकल में होंगे और वो चारों तरफ़ से दोज़ख़ियों को इस तरह घेर लेंगे कि बाहर निकलने का रास्त बन्द होगा)**(09)**।

नोटः- एक हदीस में है कि अल्लाह के बन्दों में सबसे बुरे वो लोग है जो चुग़ल ख़ोरी करते हैं और दोस्तों के बीच फूट डलवाते हैं और बेगुनाह लोगों के ऐब तलाश करते रहते हैं। (मआ़रिफुल क़ुरआन)
दुनिया की आग का असर यह है कि दिल तक पहुंचने से पहले ही आदमी मर जाता है। और जहन्नम में मौत आएगी नहीं इसलिए दिल के जलने की तकलीफ़ महसूस करेगा।

105-सूरत-फ़ील

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 5 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اَلَمۡ تَرَ كَيۡفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصۡحٰبِ الۡفِيۡلِ ؕ﴿۱﴾ اَلَمۡ يَجۡعَلۡ كَيۡدَهُمۡ فِىۡ تَضۡلِيۡلٍ ۙ﴿۲﴾ وَّ اَرۡسَلَ عَلَيۡهِمۡ طَيۡرًا
اَبَابِيۡلَ ۙ﴿۳﴾ تَرۡمِيۡهِمۡ بِحِجَارَةٍ مِّنۡ سِجِّيۡلٍ ۙ﴿۴﴾ فَجَعَلَهُمۡ كَعَصۡفٍ مَّاۡكُوۡلٍ ﴿۵﴾

आयत नं0 01 से 05

क्या आप को पता नहीं आप के रब ने हाथी वालों के साथ क्या बरताव किया(01) **क्या उनकी चालों को नाकाम नहीं कर दिया** (जो काबा के उजाड़ने के लिए थीं)(02) **और उन पर झुन्ड के झुन्ड परिन्दों के भेजे**(03) **जो उन पर कंकर की पथरियां फेंकते थे**(04) **तो** (अल्लाह ने) **उन को ऐसा कर दिया जैसे खाया हुआ भूसा** (मतमलब यह कि अल्लाह के हुक्मों की बेअदबी करने वालों को ऐसे अज़ाब व सज़ा से बेफ़िक्र न रहना चाहिए। हो सकता है कि दुनिया ही में अज़ाब आजाए जैसे हाथी वालों पर आया वर्ना आख़रत का अज़ाब तो यक़ीनी है)(05)।

नोटः- हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाइश से कुछ पहले का क़िस्सा है कि अबरहा नामी यमन का बादशाह हाथियों पर सवार बड़ी फ़ौज लेकर काबे को उजाड़ने के इरादे से मक्के पर चढ़ आया था। रास्ता रोकने वालों को हलाक करता गया। जब समझाने से भी नहीं माना तो अल्लाह तआला ने उस पर परिन्दों से अज़ाब भेजा जिन्होंने पूरी फ़ौज को हलाक कर दिया। इस क़िस्से को देखने वाले लोग उस वक़्त तक मौजूद थे जब यह सूरत उतरी। तो इस से इस्लाम के मुख़ालिफ़ों को सबक़ लेना चाहिए और अल्लाह के अज़ाब से डरना चाहिए।

106-सूरत-क़ुरैश

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 4 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

لِاِیۡلٰفِ قُرَیۡشٍ ۙ﴿۱﴾ اٖلٰفِہِمۡ رِحۡلَۃَ الشِّتَآءِ وَ الصَّیۡفِ ۚ﴿۲﴾ فَلۡیَعۡبُدُوۡا رَبَّ ہٰذَا الۡبَیۡتِ ۙ﴿۳﴾ الَّذِیۡۤ اَطۡعَمَہُمۡ مِّنۡ جُوۡعٍ ۬ۙ وَّ
اٰمَنَہُمۡ مِّنۡ خَوۡفٍ ﴿۴﴾

आयत नं0 01 से 04

चूंकि क़ुरैश (के लोग) **आदी हो गये हैं(01) यानी सर्दी और गर्मी** (के मौसम) **में सफ़र के आदी हो गये हैं(02) तो** (इस नेमत के शुक्र में) **उन को चाहिए कि इस ख़ाना-ए-काबा के मालिक** (यानी अल्लाह तआ़ला) **की इबादत करें(03) जिस ने उन को भूक में खाने को दिया और डर से उन को अमन दिया(04)।**

नोटः- मक्के वालों का असल कारोबार तिजारत था जिसके लिए उन्हें यमन व शाम मुल्कों के सफ़र करने होते थे। काबे की इ़ज़्ज़त की वजह से रास्ते में उन्हें कोई परेशान न करता था। और उन के दुशमन हाथियों की फ़ौज वालों को दर्दनाक सज़ा देकर उनकी इ़ज़्ज़त लोगों के दिलों में और बढ़ा दी थी तो मक्के वाले अमन से सफ़र करते थे और रोज़ी कमाते थे। इन आयतों में उन नेमतों को याद दिलाया गया है।

अबुल हसन रह० ने फ़रमाया है कि जिस आदमी को किसी दुशमन या और किसी मुसीबत का डर हो उसके लिए इस सूरत का पढ़ना अमन है। इमाम जज़री ने फ़रमाया कि यह अमल मेरा आज़माया हुआ है। क़ाज़ी सनाउल्लाह पानीपती रह० तफ़सीर मज़हरी में फ़रमाते हैं कि मैंने भी बहुत बार तजरबा किया है।

107-सूरत-माऊन

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 7 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اَرَءَيۡتَ الَّذِىۡ يُكَذِّبُ بِالدِّيۡنِ ؕ‏ ① فَذٰلِكَ الَّذِىۡ يَدُعُّ الۡيَتِيۡمَ ۙ‏ ② وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الۡمِسۡكِيۡنِ ؕ‏ ③ فَوَيۡلٌ
لِّلۡمُصَلِّيۡنَ ۙ‏ ④ الَّذِيۡنَ هُمۡ عَنۡ صَلَاتِهِمۡ سَاهُوۡنَ ۙ‏ ⑤ الَّذِيۡنَ هُمۡ يُرَآءُوۡنَ ۙ‏ ⑥ وَيَمۡنَعُوۡنَ الۡمَاعُوۡنَ ⑦

आयत नं0 01 से 07

क्या आपने उस आदमी को देखा है जो इन्साफ़ होने (के दिन) **को झुटलाता है(01) तो** (उस का हाल सुनिए कि) **वो आदमी वो है जो यतीम को धक्के देता है(02) और ग़रीब मुहताज को खाना देने को** (दूसरों को भी) **नहीं उकसाता** (यानी वो ऐसा पत्थर दिल है कि ख़ुद तो वो किसी ग़रीब को क्या देता दूसरों को भी इसके लिए तैयार नहीं करता, और जब बन्दों का हक़ अदा न करना ऐसा बुरा है तो अल्लाह का हक़ अदा न करना तो और ज़्यादा बुरा है)**(03) तो** (इससे साबित हुआ कि) **ऐसे नमाज़ियों के लिए बड़ी ख़राबी है(04) जो अपनी नमाज़ को भुला बैठे** (हैं यानी छोड़ देते) **हैं(05) जो ऐसे हैं कि** (जब नमाज़ पढ़ते हैं तो) **दिखावा करते हैं(06) और ज़कात बिल्कुल नहीं देते** (हैं क्योंकि ज़कात के लिए यह ज़रूरी नहीं है कि सब को दिखाकर दी जाए इसलिए उसको बिल्कुल नहीं देते, और नमाज़ जमाअ़त के साथ अदा की जाती है उसको अगर पढ़ते भी हैं तो दिखावे को पढ़ लेते) **हैं(07)**

नोटः- ऊपर आयतों में मुनाफ़िक़ का हाल बयान किया गया है जो लोगों को दिखाने के लिए और अपने को मुसलमान साबित करने के लिए नमाज़ तो पढ़ लेता है और ज़कात दिखाई देने वाली चीज़ नहीं इसलिए ईमान न होने ऐतक़ाद न होने की वजह से उसे अदा नहीं करता।

108-सूरत-कौसर

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 3 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اِنَّاۤ اَعۡطَيۡنٰكَ الۡكَوۡثَرَ ؕ﴿۱﴾ فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانۡحَرۡ ؕ﴿۲﴾ اِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الۡاَبۡتَرُ ﴿۳﴾

आयत नं0 01 से 03

(ऐ पैग़म्बर) **बेशक हमने आप को कौसर देदी** (है कौसर जन्नत की एक हौज़ का नाम भी है और दुनिया व आख़रत की हर भलाई भी इसमें शामिल) **है(01) तो** (इन नेमतों के शुक्र में) **आप अपने रब की नमाज़ पढ़िए** (क्योंकि सब से बड़ी नेमत के शुक्र में सबसे बड़ी इबादत चाहिए और वो नमाज़ है) **और** (माली इबादत भी यानी उसके नाम की) **क़ुर्बानी** (कीजिए और इसकी वजह यह भी हो सकती है कि मुशरिक लोग बुतों के नाम की क़ुर्बानी करते थे इसलिए आप को हुक्म दिया गया कि अल्लाह के नाम की क़ुर्बानी) **कीजिए(02)** (आगे उस बात का जवाब है जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बेटे हज़रत क़ासिम की बचपन में मौत हो जाने पर काफ़िरों ने जो यह ताना दिया था कि आगे इनकी नस्ल न चलेगी और इनके दीन का सिलसिला जल्दी ख़त्म हो जाएगा तो अल्लाह की महरबानी से आप बे नामोनिशान नहीं बल्कि) **सच यह है कि आप का दुशमन ही बेनामोनिशान है** (चाहे देखने में उस दुशमन की नस्ल चले या न चले लेकिन दुनिया में उस का भला चर्चा बाक़ी न रहेगा जब कि आप की उम्मत और आप की याद नेक नामी मुहब्बत और ऐतक़ाद के साथ बाक़ी रहेगी)(03)।

नोटः- अब सोचिए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नाम को अल्लाह तआ़ला ने कितनी बड़ाई दी कि आप के दौर से आज तक पूरी दुनिया के चप्पे-चप्पे पर आप का मुबारक नाम पांच वक़्त अल्लाह के नाम के साथ मीनारों पर पुकारा जाता है। और आप की नसबी व रूहानी औलाद पूरी दुनिया में मौजूद है। और आख़रत में आप को बड़ी सिफ़ारिश का सबसे बड़ा दर्जा मिलेगा। और जिन लोगों ने आप को अबतर कहा उन की औलाद कहां, उन के ख़ानदान का क्या हुआ दुनिया में आज उन का नाम लेने वाला कोई बाक़ी नहीं है।

109-सूरत-काफ़िरून

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 6 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

قُلۡ يٰۤاَيُّهَا الۡكٰفِرُوۡنَ ۙ‏ ﴿۱﴾ لَاۤ اَعۡبُدُ مَا تَعۡبُدُوۡنَ ۙ‏ ﴿۲﴾ وَلَاۤ اَنۡتُمۡ عٰبِدُوۡنَ مَاۤ اَعۡبُدُ‌ ۚ‏ ﴿۳﴾ وَلَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدۡتُّمۡ ۙ‏ ﴿۴﴾
وَلَاۤ اَنۡتُمۡ عٰبِدُوۡنَ مَاۤ اَعۡبُدُ ؕ‏ ﴿۵﴾ لَكُمۡ دِيۡنُكُمۡ وَلِىَ دِيۡنِ ﴿۶﴾

आयत नं0 01 से 06

आप (इन काफ़िरों से) **कह दीजिए कि ऐ काफ़िरों** (मेरा और तुम्हारा तरीक़ा एक नहीं हो सकता)(01) **न** (तो अब) **मैं तुम्हारे माबूदों** (यानी देवताओं) **की इबादत करता हूं(02) और न तुम मेरे माबूद** (अल्लाह तआला) **की इबादत करते हो(03) और न** (आगे भी) **मैं तुम्हारे माबूदों की इबादत करूंगा(04) और न तुम मेरे माबूद की इबादत करोगे** (मतलब यह कि मैं तौहीद पर क़ाइम होकर शिर्क नहीं कर सकता और तुम शिर्क पर जमे रह कर तौहीद पर नहीं हो सकते यानी तौहीद व शिर्क एक साथ जमा नहीं हो सकते)(05) **तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन है** (तुम को तुम्हारा बदला मिलेगा) **और मेरे लिए मेरा दीन है** (मुझको मेरा बदला मिलेगा)(06)।

नोटः- मक्के के काफ़िरों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने समझौते के लिए यह बात रक्खी थी कि आप हमारे माबूदों की एक साल इबादत करें और हम आप के माबूद की एक साल इबादत करें। तो इस पर ये आयतें उतरीं जिन में ऐसे किसी समझौते से इनकार कर दिया गया। इससे मालूम हुआ कि सुलह अपने इन्सानी हक़ों में होती है। अल्लाह के क़ानून और दीन के उसूलों में किसी सुलह समझौते की गुन्जाइश नहीं।

हदीसः- कुछ सहाबा ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अर्ज़ किया कि हमें कोई दुआ बता दीजिए जो हम सोने से पहले पढ़ा करें। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सूरत "कुल या अय्युहल काफ़िरून" पढ़ने की नसीहत की और फ़रमाया कि यह शिर्क से छुटकारा है। (तिरमिज़ी)

110-सूरत-नस्र

"इस मदनी सूरत में 1 रूकू और 3 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

اِذَا جَآءَ نَصۡرُ اللّٰهِ وَالۡفَتۡحُ ۙ﴿۱﴾ وَرَاَیۡتَ النَّاسَ یَدۡخُلُوۡنَ فِیۡ دِیۡنِ اللّٰهِ اَفۡوَاجًا ۙ﴿۲﴾ فَسَبِّحۡ بِحَمۡدِ رَبِّكَ وَاسۡتَغۡفِرۡهُ ؕ
اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ﴿۳﴾

आयत नं0 01 से 03

(ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) **जब अल्लाह की मदद और** (मक्के की) **जीत** (अपनी निशानियों के साथ) **आ पहुंचे(01) और** (जीत की निशानियां ये हैं कि) **आप लोगों को अल्लाह के दीन में फ़ौज दर फ़ौज दाख़िल होता देखलें(02) तो** (उस वक़्त समझिए कि दुनिया में आप के रहने का काम पूरा हो चुका, अब आख़रत का सफ़र नज़दीक है उसके लिए तैयारी कीजिए और) **अपने रब की तारीफ़ के साथ तस्बीह कीजिए और उससे मुआफ़ी** (मांगिए यानी ऐसी बातें जो आप के रूतबे के ख़िलाफ़ हों उनसे मुआफ़ी) **मांगिए, बेशक वो बड़ा तौबा क़ुबूल करने वाला है(03)।**

नोटः- इस सूरत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात नज़दीक होने की तरफ़ इशारा है। और जिन बातों की आप को नसीहत की गई है वो ख़ास तौर से उम्मत को बताने के लिए हैं वर्ना आप तो मासूम हैं।

हज़रत अबूहुरैरा रज़ि० कहते हैं कि इस सूरत के उतरने के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इबादत में बहुत ज़्यादा मेहनत की यहां तक कि आप के मुबारक पांव सूज गये। और हज़रत उम्मे सलमा फ़रमाती हैं कि हर वक़्त ये दुआ पढ़ते

سُبۡحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمۡدِهٖ اَسۡتَغۡفِرُ اللّٰهَ وَاَتُوۡبُ اِلَیۡهِ

"सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही असतग़फ़िरूल्लाहा व अतूबु इलैह"

111-सूरत-लहब

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 5 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

تَبَّتۡ يَدَاۤ اَبِىۡ لَهَبٍ وَّتَبَّ ؕ‏ ﴿۱﴾ مَاۤ اَغۡنٰى عَنۡهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ؕ‏ ﴿۲﴾ سَيَصۡلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۖۚ‏ ﴿۳﴾ وَّامۡرَاَتُهٗ ؕ
حَمَّالَةَ الۡحَطَبِ‌ ۚ‏ ﴿۴﴾ فِىۡ جِيۡدِهَا حَبۡلٌ مِّنۡ مَّسَدٍ ﴿۵﴾

आयत नं0 01 से 05

अबूलहब के हाथ टूट जाएं और वो बर्बाद हो जाए(01) न उस का माल उसके काम आया और न उसकी कमाई (माल असल दौलत है और कमाई उस का नफ़ा मतलब यह कि कोई सामान उसको तबाही से न बचा पाएगा और दुनिया में उसका ये ही हाल हुआ)(02) **जल्दी ही** (यानी मरते ही) **दहकती आग में जाएगा** (वहां आख़रत का अज़ाब होगा)(03) **और** (वो भी और) **उसकी बीवी भी जो लकड़ियां लाद कर लाती है** (यानी कान्टेदार लकड़ियां जिन को वो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रास्ते में बिछा देती थी ताकि आप को तकलीफ़ पहुंचे)(04) **उसके गले में** (दोज़ख़ में वहां का पट्टा और ज़ंजीर होगी जैसे वो) **एक रस्सी होगी ख़ूब बंटी हुई** (जैसे बड़े मुजरिमों के गले में होती है)(05)।

नोटः- अबूलहब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सख़्त दुशमन था वो हुजूर को बहुत सताता था। और बददुआ देता था। उस की बीवी भी उस का बहुत साथ देती थी और कांटेदार लकड़ियां हुजूर के रास्ते में बिछा देती थी कि आप को तकलीफ़ पहुंचे। इस सूरत में उन दोनों के अन्जाम की ख़बर दी गई है। अबूलहब को ताऊन का दाना निकला घर वालों ने बीमारी फैलने के ख़तरे से उसे अलग डाल दिया और मरने के बाद जब सड़ने लगा और बदबू फैली तो मज़दूरों से बाहर फिकवा दिया जो गले में रस्सी बान्धकर घसीटते हुए बाहर फेंक आए। यह अन्जाम तो दुनिया में हुआ और आख़रत का अज़ाब दहकती हुई आग है।

112-सूरत-इख़लास

"इस मक्की सूरत में 1 रूकू और 4 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمۡ یَلِدۡ ۬ۙ وَ لَمۡ یُوۡلَدۡ ۙ﴿۳﴾ وَ لَمۡ یَکُنۡ لَّهٗ کُفُوًا اَحَدٌ ﴿۴﴾

आयत नं0 01 से 04

नोटः- एक बार काफ़िरों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कहा कि अपने रब की ख़ूबियां और उसके ख़ानदान के बारे में बताइये उस पर यह सूरत उतरी।

आप (इन लोगों से) **कह दीजिए कि वो यानी अल्लाह** (अपनी हस्ती में) **एक** (है यानी सदा से है सदा रहेगा और उसे हर वक़्त हर चीज़ का इल्म है और उसकी क़ुदरत सब को घेरे हुए) **है (01) अल्लाह बेनियाज़** (है यानी किसी का मुहताज नहीं और हर कोई उसका मुहताज) **है(02) उसके कोई औलाद नहीं न वो किसी की औलाद है(03) और न कोई उसकी बराबर का है(04)।**

नोटः- एक हदीस में है कि एक बार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने लोगों को जमा करके फ़रमाया कि मैं तुम्हें एक तिहाई क़ुरआन सुनाउंगा फिर आपने सूरत "क़ुल हुवल्लाहु अहद" सुनाई और फ़रमाया कि यह सूरत एक तिहाई क़ुरआन की बराबर है। (मुस्लिम)

एक आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा कि मुझे इस सूरत (यानी सूरत इख़्लास) से बड़ी मुहब्बत है आप ने फ़रमाया कि इसकी मुहब्बत ने तुम्हें जन्नत में दाख़िल कर दिया। (इब्ने कसीर)

113-सूरत-फ़लक़

"इस मदनी सूरत में 1 रूकू और 5 आयतें हैं"

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ ۙ﴿۱﴾ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿۲﴾ وَ مِنۡ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾ وَ مِنۡ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِی الۡعُقَدِ ۙ﴿۴﴾
وَ مِنۡ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ٪﴿۵﴾

आयत नं0 01 से 05

(ऐ पैग़म्बर) **आप** (अपने रब से पनाह मांगने के लिए और दूसरों को भी पनाह मांगना सिखाने के लिए यानी अल्लाह पर पूरा भरोसा सिखाने के लिए) **कहिए कि मैं सुबह के मालिक की पनाह लेता हूं** (और जिस तरह अल्लाह तआला रात की अन्धेरी को दूर करके सुबह की रौशनी निकाल देता है इसी तरह जादू को भी मिटा सकता है)**(01) हर उस चीज़ की बुराई से** (पनाह लेता हूं) **जो उसने पैदा की है(02) और** (ख़ास कर) **अन्धेरी रात की बुराई से** (पनाह लेता हूं) **जब वो रात आ जाए** (रात में बुराई का ख़तरा ज़्यादा रहता है)**(03) और** (ख़ास कर) **गन्डे की गिरहों पर पढ़-पढ़ कर फूंकने वाली जानों** (यानी जादूगरों) **की बुराई से(04) और हसद करने** (यानी जलने) **वाले की बुराई से** (पनाह लेता हूं) **जब वो हसद करने लगे(05)।**

नोटः- यह सूरत और इसके बाद की सूरत यानी सूरत नास एक ही साथ एक क़िस्से के बारे में उतरी हैं। कि एक बार एक यहूदी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जादू कर दिया था जिसके असर से आप बीमार हो गये। हज़रत जिब्रील ने आकर हुज़ूर को ख़बर दी। उनके बताए हुए कुंए से वो जादू वाली चीज़ निकाली गई। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये आयतें पढ़ कर उन गिरहों को खोल दिया। आप उसी वक़्त बिल्कुल तन्दरूस्त हो गये।

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब कोई बीमारी पेश आती तो ये दोनों सूरतें (सूरत फ़लक़ व सूरत नास) पढ़ कर अपने हाथों पर

दम करके सारे बदन पर फेर लेते थे। फिर जब मर्ज़े वफ़ात में आप की तकलीफ़ बढ़ी तो मैं ये सूरतें पढ़ कर आपके हाथों पर दम कर देती थी आप अपने सारे बदन पर हाथ फेर लेते थे। मैं यह काम इसलिए करती थी कि हज़रत के मुबारक हाथों का बदल मेरे हाथ न हो सकते थे। (इमाम मालिक - तफ़सीर इब्ने कसीर)

मसअलाः- बीमारी की तरह जादू पैग़म्बर पर भी हो सकता है लेकिन पैग़म्बरी पर उस का असर नहीं होता।

114-सूरत-नास

"इस मदनी सूरत में 1 रूकू और 6 आयतें हैं"

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान बहुत रहम वाला है

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِكِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ۬ الْخَنَّاسِ ۙ﴿۴﴾ الَّذِیْ یُوَسْوِسُ
فِیْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ﴿۶﴾

आयत नं0 01 से 06

आप कहिए कि मैं पनाह लेता हूं लोगों के मालिक की(01) (और) **लोगों के बादशाह की**(02) (और) **लोगों के माबूद** (यानी अल्लाह तआ़ला) **की**(03) **वसवसा डालने** (यानी बहकाने) **वाले पीछे हट जाने वाले** (शैतान) **की बुराई से** (पीछे हट जाने का मतलब यह है कि हदीस में है कि अल्लाह का नाम लेने से शैतान हट जाता है)(04) **जो लोगों के दिलों में वसवसा डालता है**(05) **चाहे वो** (वसवसा डालने वाला) **जिन्न हो या इन्सान** (यानी जिस तरह मैं शैतान जिन्नात से पनाह मांगता हूं उसी तरह शैतान इन्सानों से भी पनाह मांगता हूं जैसा कि कुरआने करीम में दूसरी जगह जिन्नात और इन्सान दोनों में शैतानों के होने का ज़िक्र है)(06)।

नोटः- रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हर इन्सान के दिल में दो घर हैं एक में फ़रिशता रहता है दूसरे में शैतान (फ़रिशता इन्सान को नेक कामों का शौक़ दिलाता रहता है और शैतान बुरे कामों का वसवसा डालता है)। फिर जब इन्सान अल्लाह का ज़िक्र करता है तो शैतान पीछे हट जाता है। और जब तक वो अल्लाह के ज़िक्र में नहीं लगता तो अपनी चोंच इन्सान के दिल पर रख कर उसमें बुराइयों के वसवसे डालता है। (मज़हरी)